ISSN 2394-8485

मासिक

# गुरमत ज्ञान

३/-

मार्गशीर्ष-पौष संवत् नानकशाही ५५७ दिसंबर 2025 वर्ष १९ अंक ४

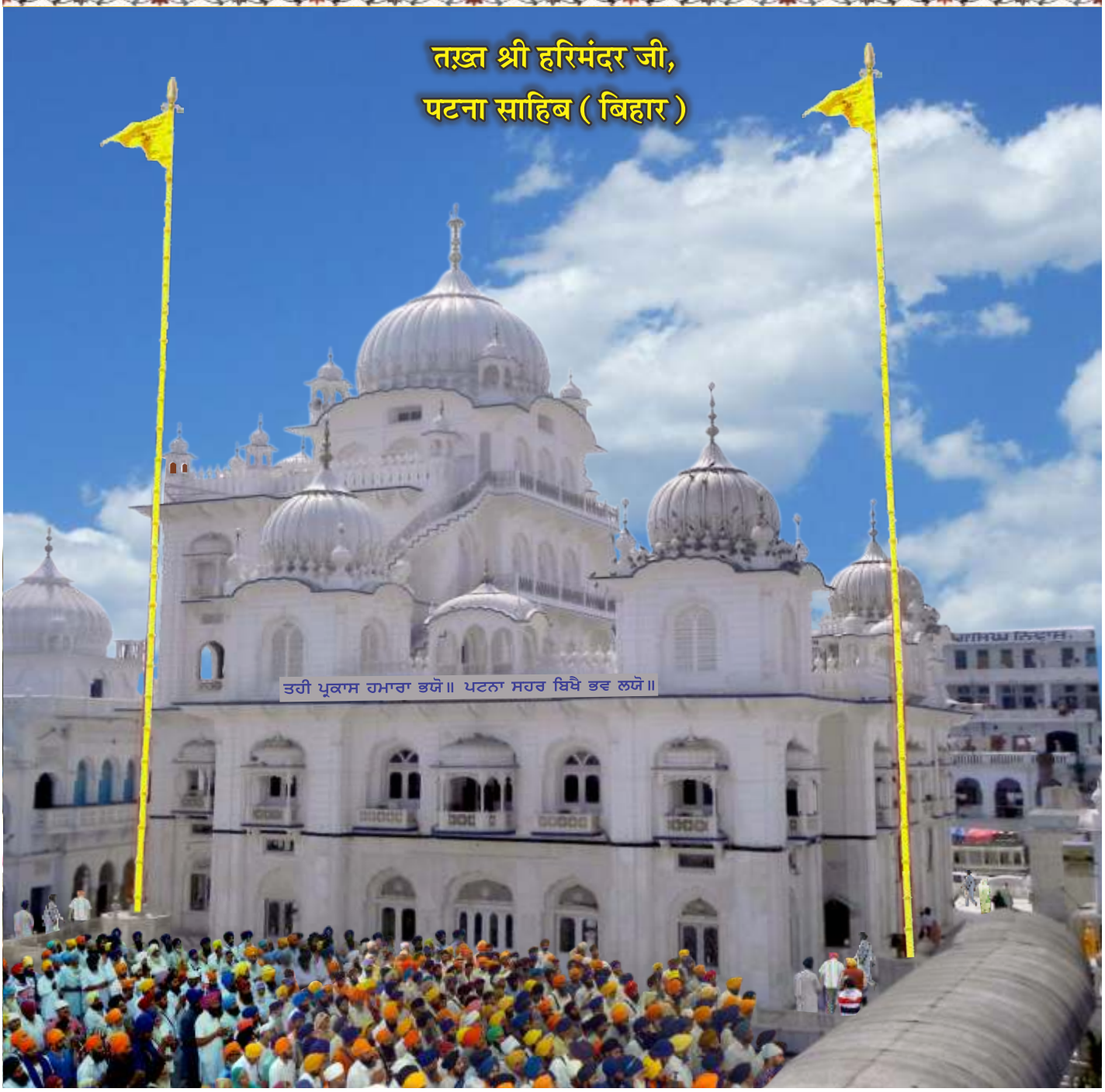

बड़े साहिबज़ादे चमकौर की जंग में पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए

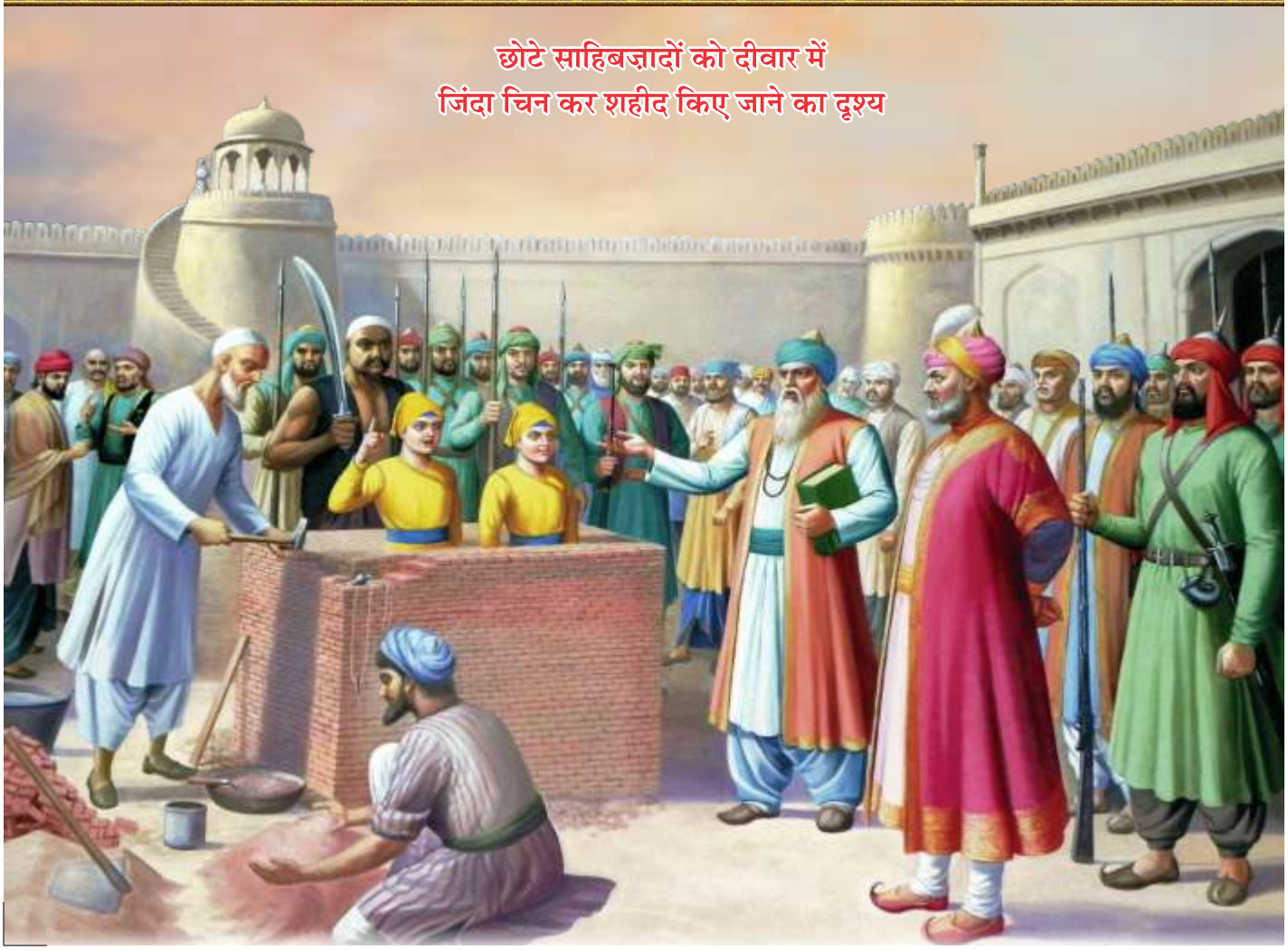

छोटे साहिबज़ादों को दीवार में
जिंदा चिन कर शहीद किए जाने का दृश्य

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

*गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥*

मासिक

# गुरमत ज्ञान

मार्गशीर्ष–पौष संवत् नानकशाही 557
वर्ष 19 अंक 4 दिसंबर 2025

*संपादक : सतविंदर सिंह*
*सहायक संपादक : जगजीत सिंह*

| चंदा | |
|---|---|
| सालाना (देश) | 10 रुपये |
| आजीवन (देश) | 100 रुपये |
| सालाना (विदेश) | 250 रुपये |
| प्रति कापी | 3 रुपये |

**चंदा भेजने का पता**
**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी**
**(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)**
**श्री अमृतसर साहिब -143006**
**फोन :** 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
**फैक्स :** 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी 7
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंह

माता साहिब कौर जी : ख़ालसे की माता के संदर्भ में 18
–स. जगदीप सिंह लतीफ़पुर

शहीदी-प्रसंग : छोटे साहिबजादे एवं माता गुजरी जी 21
–डॉ. मनजीत कौर

चमकौर साहिब का बेमिसाल युद्ध 27
–ज्ञानी जसमेर सिंह

शहीद भाई संगत सिंह जी 36
–डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'

चमकौर की जंग के शहीद भाई मदन सिंह व भाई काठा सिंह 38
–डॉ. गुरप्रीत सिंह

सुलतानपुर लोधी : पूर्व काल और वर्तमान में 41
–ज्ञानी कौर सिंह कोठा गुरु

. . . . शहीद बाबा गुरबख़्श सिंह जी 45
–डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'

ख़बरनामा 48

## गुरबाणी विचार

*पोखि तुखारु पड़ै वणु त्रिणु रसु सोखै ॥*
*आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥*
*मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी ॥*
*अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥*
*दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥*
*नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥१४ ॥* *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०९)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी महाराज तुखारी राग में 'बारह माहा' बाणी की इस पावन पउड़ी में पौष मास के प्राकृतिक वातावरण और इसकी कठोरता के विशेष परिप्रेक्ष्य में मनुष्य-मात्र को प्रभु-नाम के साथ प्रीति लगाकर अपने जीवन को रमणीय बनाने का निर्मल गुरमति मार्ग बख़्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि पौष मास में जब अत्यंत शीत पड़ती है, जब कोहरा पड़ता है, तब वनस्पति के प्रत्येक तिनके में से रस सूख जाता है। ऐसी स्थिति में हे प्रभु! आप आकर मेरे तन-मन में, मेरे मुख में बस क्यों नहीं जाते, क्योंकि आपके बिना मेरे मन, मेरी आत्मा रूपी वनस्पति पर भी वियोग का कोहरा आ पड़ा है, जिसने आत्मिक रस को सुखा दिया है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिस जीव अथवा मनुष्य-मात्र के मन-अंतर में गुरु का शबद मिल जाने पर समस्त संसार के आधार प्रभु आ बसते हैं वह आनंद का अनुभव करता है। उस मनुष्य-मात्र को अंडे से, जेरज से, पसीने से और भूमि में से उत्पन्न होने वाली सारी रचना में प्रभु की ज्योति समाई हुई दृष्यटव्य हो जाती है अर्थात् वह प्रत्येक प्रकार के वैर-विरोध, ईर्ष्या, जलन आदि द्वैत भावों से ऊपर उठ जाता है। अंत में गुरु जी कथन करते हैं कि हे दयालु दाता ! मुझको पौष मास की शीत के इस मौसम में दया करके ऐसी आत्मिक सूझ प्रदान कर दो कि मैं भी ऊंची आत्मिक अवस्था को प्राप्त कर सभी जीवों में आपको देख-महसूस कर सकूं, क्योंकि जिसका प्रभु के साथ प्यार विकसति हो जाता है वही इस संसार में आत्मिक रस अथवा रूहानी आनंद का एहसास कर सकता है।

संपादकीय

# आओ! शहीदों की विरासत को संभालें!

सिक्खी के महल को मज़बूत बनाने के लिए दुधमुँहे बच्चों से लेकर वयोवृद्धों तक ने इसकी बुनियाद को शहादत के रक्त से सींचा गया है। अकाल पुरख की कृपा सदका शहीदों में से एक भी ऐसा नहीं, जो अपने धर्म-पथ से डगमगा गया हो। सिक्ख शहीदी तवारीख में पौष माह की शहीदी-दासतान तो रौंगटे खड़े कर देने वाली है। श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ देने के बाद दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दोनों बड़े साहिबज़ादे तथा बहुत-से आस्थावान सिक्ख चमकौर की जंग में जूझते हुए शहादत प्राप्त कर गए। सरहिंद में दोनों छोटे साहिबज़ादों को दीवारों में ज़िंदा चिनकर शहीद कर दिया गया और माता गुजरी जी ठंडे बुर्ज में शहादत पा गए।

छोटे साहिबज़ादों की शहादत के बारे में बात करें तो उम्र के तकाज़े से यह शहादत बा-कमाल एवं बेमिसाल है। छोटी-सी उम्र हो और आगे से शत्रु-दल की शस्त्रबद्ध शाही फौज, भांति-भांति के लालच, बहकावे आदि देकर थक जाए, किंतु हौसले फिर भी बुलंद रहें, ऐसे साहस के पीछे खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति, माता जीतो जी तथा दादी माता गुजरी जी की शिक्षा व दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की "सीसु दीआ पर सिररु न दीआ" वाली प्रेरणा काम कर रही थी।

गुरु जी के चारों साहिबज़ादों ने यह साबित कर दिखाया कि ज़िंदगी में बड़े कीर्तिमान स्थापित करने के लिए लंबी आयु की नहीं, बल्कि जज़्बे एवं दृढ़ इरादे की आवश्यकता होती है। गुरु जी के चारों साहिबज़ादों ने ज़ब्र-जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध सत्य-धर्म की आवाज़ बुलंद करते हुए ज़ालिमों के आगे झुकने की बजाय अपनी जान न्यौछावर करने वाले मार्ग को चुना, इसी लिए आज समूचा सिक्ख जगत चार साहिबज़ादों को 'बाबा' लकब से पुकारता है।

साहिबज़ादों की इस लासानी शहादत के जज्बे को पारिवारिक पृष्ठभूमि में तलाशने का प्रयत्न करें तो सबसे पहले शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी ने कठोर यातनाएं सहन करने हुए जब्र का मुकाबला सब्र के साथ करना सिखाया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत दुनिया के इतिहास में मात्र एक ऐसी लासानी शहादत है जो दूसरे धर्म के लोगों की पुकार पर, धर्म की रक्षार्थ प्रवान चढ़ी।

समूचे सिक्ख संघर्ष के संदर्भ में इन शहादतों के उद्देश्य के बारे में विचार करें तो मुख्य रूप से ये पहलू सामने आते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म के अनुसार अपने धार्मिक संस्कार करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो, किसी पर ज़बरन अपना धर्म न थोपा जाए, अपने सभ्याचार के अनुसार पहरावा पहनने तथा अपनी बोली बोलने की पूर्ण आज़ादी हो, देश के आर्थिक साधन योग्यता के अनुसार सबके लिए बराबर हों, किसी गरीब का हक न मारा जाए, प्रत्येक कार्य न्याय की कसौटी पर परख कर किया जाए आदि। इन सब बातों को

व्यवहारिक रूप में लाने के लिए गुरु साहिबान ने गुरबाणी द्वारा प्रचार किया। जब-जब इन सिद्धांतों, मानवाधिकारों को रौंदा गया, तब-तब ज़रूरत पड़ने पर शस्त्रबद्ध संघर्ष भी करना पड़ा। इस संघर्ष में गुरु साहिबान, गुरु-परिवार, बच्चों, बुजुर्गों, नौजवानों के रूप में असंख्य सिक्खों ने शहादत दी। हक-सच के लिए जूझते हुए दी गई कुर्बानियों वाले रक्तरंजित ऐतिहासिक पृष्ठों को पढ़ प्रत्येक गुरसिक्ख को अपने पूर्वजों पर फख़्र महसूस होता है। वास्तविक रूप में यह तभी समझा जा सकता है यदि इन शहादतों के उद्देश्य को आज हम अपने व्यवहारिक जीवन में दृढ़ कर सकें। आज पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव तले सिक्ख परिवारों में बहुत-सी ऐसी अलामतें घर कर चुकी हैं, जिनके कारण हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि हम वास्तव में उपरोक्त शहीदों के वारिस हैं! इन सब में से सिक्ख परिवारों में फैला पतितपन का रोग सबसे बड़ी अलामत समझा जा सकता है। हमारी खातिर साहिबज़ादों ने शहादत के समय फख़्र के साथ ऐसे ही शब्द कहे होंगे :

*हम जान दे के औरों की, जानें बचा चले।*
*सिक्खी की नींव हम हैं, सरों पर उठा चले। . .*
*सिंघों की सल्तनत का है, पौधा लगा चले। १०९।* *(शहीदानि-वफा)*

हम साहिबज़ादों के वारिस हों और हमारे सिर पर केशों को कत्ल करती हुई कैंची चले, यह बात हरगिज़ शोभा नहीं देती।

हम उस दादी मां, माता गुजरी जी के वारिस हैं, जो साहिबज़ादों को शहादत हेतु भेजने से पहले कहती थी :

*जाने से पहले आओ, गले से लगा तो लूं!*
*केसों को कंघी कर दूं, ज़रा मुंह धुला तो लूं!*
*प्यारे सरों पे नन्हीं-सी, कलगी सजा तो लूं!*
*मरने से पहले तुमको, दूल्हा बना तो लूं!७२।* *(शहीदानि-वफा)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पंथ की खातिर चारों साहिबज़ादे कुर्बान करने के बाद श्री दमदमा साहिब की पावन धरती पर खालसा पंथ की तरफ हाथ करते हुए कहा :

*इन पुतरन के सीस पर, वार दीए सुत चार।*
*चार मुए तो क्या हुआ, जीवत कई हज़ार।*

हमारे परिवारों में फैले पतितपन के लिए हमारे माता-पिता भी बराबर के जिम्मेदार हैं। उन्हें अपने बच्चों के केश कत्ल करवाने से पूर्व धर्म-पथ पर अविचल खड़े श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लाल नज़र आने चाहिए।

आज आधुनिक युग में हमें ज़रूरत है कि हम खुद गुरमति सिद्धांतों के धारक बनकर अपने बच्चों को अपनी लासानी विरासत से परिचित करवाएं! सिक्ख रहित मर्यादा के धारक बनकर हकीकतन अपने शहीदों के वारिस कहलाने के हकदार बनें!!

# श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

संतों में परम संत, योद्धाओं में महायोद्धा, ज्ञानियों में ज्ञान का महासागर , दाताओं में सर्वदाता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन विजय-उत्सव जैसा था। उनके धर्म मार्ग में जो भी बाधा बन कर आया उनकी महानता के आगे हारता गया, झुकता गया। जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपा प्राप्त हुई उसका उद्धार हो गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शरण में आना सौभाग्य था। संत की दृष्टि ही जन्मों-जन्मों के पाप धो देती है। गुरु साहिब धर्म के प्रतिपालन के लिये जगत में आये थे और दृढ़ संकल्प से इस उद्देश्य की पूर्ति में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करने में सफल रहे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी से उत्पन्न हुई परिस्थितियों और विषम राजनीतिक-सामाजिक परिदृश्य में धर्म को स्थापित करना एक असम्भव कार्य था। इन परिस्थितियों के अंकुर श्री गुरु अरजन साहिब की शहीदी से ही फूटने लगे थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब समझ गये थे कि धर्म हितार्थ सभी विकल्प खुले होने चाहिये। इसीलिये, उन्होंने स्वयं शस्त्र धारण किये और सिक्खों को भी अस्त्र-शस्त्र का मित्र बनाया। सिक्ख भविष्य के लिये तैयार थे तभी शाहजहां की फ़ौज से चार युद्ध लड़ने पड़े और चारों में गुरु साहिब को विजय प्राप्त हुई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को लंबे संघर्ष के लिये तैयार करना आरम्भ कर दिया था। उनका प्रथम संकल्प था कि सिक्ख अपने धर्म पर दृढ़ हो और द्वितीय संकल्प था कि अपने धर्म की दृढ़ता के साथ रक्षा करने में समर्थ हो। गुरु साहिब जानते थे कि जब धर्म का ज्ञान होगा तभी उसके पालन और रक्षण की भावना पैदा होगी। उन्होंने सिक्खों को गुरबाणी के साथ जोड़ा, आंतरिक व्यवस्था का सुधार करते हुए मसंद-प्रथा को समाप्त किया और सिक्खों को ज्ञानवान बनाने के लिये अनेक कदम उठाये। सिक्खों में शारीरिक अभ्यास, शस्त्र-अभ्यास की रुचि को प्रोत्साहित किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी राजसी शान से अपना दरबार सजाते, ताकि सिक्खों में आत्मविश्वास पैदा हो सके। इसका परिणाम सकारात्मक निकला। सिक्ख निर्भय होकर रहने लगे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी मानसिक दबाव न बन

**ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

कर उनके लिये प्रेरणा का प्रतीक बन गई। गुरु-दरबार और सिक्खों की इस भावना ने स्थानीय पहाड़ी हिंदू राजाओं में प्रबल ईर्ष्या पैदा कर दी। वे इसे अपने लिये चुनौती मानने लगे। इस बीच श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक नया नगर पाउंटा साहिब बसाया और श्री अनंदपुर साहिब से वहां चले गये। पाउंटा साहिब में ज्ञान का महान दरबार सज गया और देश भर से आये चुने हुए विद्वान गुरु साहिब के संरक्षण में रह कर श्रेष्ठ साहित्य का सृजन करने लगे। गुरु जी ने स्वयं भी साहित्य-सृजन किया।

गुरु दरबार की यह आभा जब पहाड़ी राजाओं से सहन न हुई तो वे टकराव के अवसर खोजने लगे। कहलूर रियासत के राजा भीम चंद के पुत्र का विवाह था। उसने बहाने से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से कुछ बहुमूल्य वस्तुओं की मांग की। इनमें दुनी चंद का भेंट किया गया शानदार 'राजसी तंबू' और आसाम के राजा का भेंट किया गया 'परसादी हाथी' भी शामिल था। उसकी बुरी नीयत को भांपते हुए गुरु साहिब ने इन्कार कर दिया। भीम चंद के पुत्र का विवाह श्रीनगर (गढ़वाल) के राजा फतेह चंद की पुत्री के संग हो रहा था जो गुरु साहिब के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखता था। भीम चंद के पुत्र की बारात, जो श्रीनगर जाने वाली थी, उसे पाउंटा साहिब से गुजर कर जाना था। राजा भीम चंद ने शातिराना दिमाग प्रयोग करते हुए बारातियों के संग एक ऐसी फौज भी शामिल कर दी जो पाउंटा साहिब से गुजरते वक्त मौका पाकर गुरु-दरबार पर आक्रमण कर वहाँ से कीमती वस्तुओं को लूट ले। गुप्त सूचना के आधार पर गुरु साहिब सचेत थे। गुरु साहिब ने राजा फतेह चंद के साथ मित्रता को ध्यान में रख कर चुनिंदा बारातियों को नाव से यमुना पार करा दिया तथा अन्य बारातियों व बाराती बने फौजी दस्ते को अन्य मार्ग से जाने को कहा। गुरु साहिब ने दो सिक्खों— भाई नंद चंद और भाई दया राम को पांच सौ सिक्खों के साथ विवाह समारोह में भेजा और लगभग एक लाख रुपये कीमत के स्वर्ण आभूषण भी उपहार में भेजे। भीम चंद यह सहन न कर सका उसने अपने समधी राजा फतेह चंद से कहा कि "गुरु जी ने मेरा अपमान किया है। आप मेरे रिश्तेदार होने के नाते मेरी मदद करे।" मैं गुरु जी पर आक्रमण करने वाला हूं, अत: आप मेरा साथ दें, अन्यथा मैं अपने पुत्र का विवाह न कर आपकी पुत्री की डोली नहीं ले जाऊंगा।" इस पर राजा फतेह शाह ने उसकी शर्त मान ली और वो भी गुरु जी का विरोधी बन बैठा।

भीम चंद और उसके मित्र राजाओं ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अधीनता स्वीकार करने और कर देने को कहा। गुरु साहिब ने साफ़ मना कर दिया था कि वे किसी के अधीन नहीं हैं। श्रीनगर

भेजे गये सिक्ख जब वापिस लौट रहे थे तो भीम चंद तथा अन्य पहाड़ी राजाओं ने उन पर हमला कर दिया। सिक्ख बड़ी वीरता के साथ लड़े और वैरी को भागने पर विवश कर दिया। सिक्खों ने जब पाउंटा साहिब पहुंच कर गुरु साहिब को सारी बात बताई तो उन्होंने आकलन कर लिया कि अब युद्ध हो सकता है। उन्होंने पाउंटा साहिब में युद्ध न होने देकर इसके लिए पाउंटा साहिब से दस किलोमीटर दूर यमुना नदी के किनारे 'भंगानी' नामक स्थान को चुना। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नेतृत्व में सिक्ख भंगानी के मैदान में डट गये। यह गुरु साहिब का पहला युद्ध था जो सन् १६८९ में लड़ा गया। भीम चंद के दबाव में आकर उसका समधी राजा फतेह चंद भी गुरु साहिब के विरुद्ध लड़ा। भीम चंद के नेतृत्व में तीस हजार से अधिक की संयुक्त सेना ने आक्रमण कर दिया। गुरु साहिब के साथ मात्र चार हजार सैनिक थे। इस युद्ध में पीर बुद्धू शाह ने भी अपने पुत्रों और सात सौ अनुयायिओं के साथ गुरु साहिब का सहयोग किया। सिक्खों की वीरता के आगे वैरी टिक न सके। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ऐतिहासिक विजय हुई। गुरु साहिब के हाथों अनेक बड़े योद्धाओं सहित राजा हरी चंद भी मारा गया। वैरी सेना को भारी क्षति उठानी पड़ी। इस युद्ध में गुरु जी की बुआ बीबी वीरो जी के पुत्र भी शहीद हुए। इस युद्ध में पीर बुद्धू शाह के तीन बेटे— सैय्यद अशरफ, सैय्यद मुहम्मद शाह, सैय्यद मुहम्मद बख्श और पिता सैय्यद गुलाम शाह सहित उनके कई मुरीद शहीद हुए। यह गुरु साहिब के विजय रथ का पहला पड़ाव था। भंगानी युद्ध के बाद छ: महीने तक गुरु साहिब पाउंटा साहिब रुके और फिर श्री अनंदपुर साहिब लौट आये।

श्री अनंदपुर साहिब आते ही गुरु साहिब ने भविष्य को भांपते हुए सुरक्षा के कदम उठाने आरम्भ कर दिए। आपने लोहगढ़, केसगढ़ तथा फतहिगढ़ किलों का निर्माण किया। सबसे ऊंचे स्थान पर किला अनंदगढ़ बनाया गया। यह ऐसी उत्तम व्यूह रचना थी कि अनंदगढ़ तक पहुंचना किसी के भी लिये असम्भव हो गया। सिक्ख पंथ का केंद्र अब पुन: श्री अनंदपुर साहिब बन गया। गुरु साहिब का दरबार सजने लगा और बड़ी संख्या में संगत आने लगी।

औरंगजेब पहाड़ी राजाओं से कर वसूला करता था। उसे काफी समय से पहाड़ी राजाओं से कर नहीं प्राप्त हुआ था। जब उसके आदेश पर पंजाब और कश्मीर के गवर्नर के माध्यम से दबाव डाला गया तो पहाड़ी राजाओं ने कहा कि उनका बहुत-सा धन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ विरुद्ध करने में खर्च हो गया है। जब उनकी कोई भी दलील काम न आई तो भयभीत होकर पहाड़ी राजा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शरण में

आये। गुरु साहिब ने इस आशा में पहाड़ी राजाओं की सहायता करने का निर्णय किया कि वे औरंगजेब के चंगुल से निकल आयें। औरंगजेब ने फौजदार मियाँ खान को कर-उगाही के लिए आदेश दिया। मियाँ खान ने अपने भतीजे अलफ खान को फ़ौज सहित कर वसूलने के लिये भेजा। वह जब नादौन पहुंचा तो भीम चंद ने कर देने से मना कर दिया और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से सहायता माँगी। इस युद्ध में गुरु साहिब ने अतुल पराक्रम का प्रदर्शन किया। कहते हैं कि उन्होंने बायें हाथ से भी तीर चलाये। इस युद्ध में भी गुरु साहिब विजयी रहे। शत्रु टिक न सका और मैदान छोड़ कर भाग गया। यह युद्ध सन् १६९० में हुआ। गुरु साहिब वहां आठ दिन रुके। पहाड़ी राजाओं ने उन्हें भव्य विदाई देकर श्री अनंदपुर साहिब भेजा। यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का हिंदू राजाओं पर बहुत बड़ा उपकार था। गुरु-घर ने सदैव दीन पर उपकार किये हैं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ग्वालियर के किले से उन बावन हिंदू राजाओं को जहांगीर की कैद से मुक्त कराया था जो जीवन तक से निराश हो मृत्यु की कगार पर जा पहुंचे थे।

नादौन के युद्ध के बाद कई वर्षों तक शांति रही। इस काल का उपयोग श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्ख पंथ को मजबूत बनाने के लिये किया। श्री अनंदपुर साहिब में घर-घर में लंगर लगाये जाते थे। सिक्ख मर्यादा को दृढ़ कराया जाता था बहुत-सी सामाजिक बुराइयों को दूर किया गया और सिक्खों में निरंतर वीरता का भाव पैदा करने के उपाय किये जाते रहे।

इस बीच औरंगजेब अपनी चालें चलता रहा। पंजाब पर अपना शिकंजा कसने के लिये उसने कश्मीर के गवर्नर इब्राहिम को पंजाब भेज दिया। राजा भीम चंद गुरु साहिब की ताकत को प्रत्यक्ष देख चुका था। उसने सारा वैर त्याग कर मैत्री-भाव अपना लिया। शेष हिंदू राजा भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से टकराने का साहस खो चुके थे। सितंबर, १६९२ में भीम चंद की मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर उसका पुत्र अजमेर चंद गद्दी पर बैठा। अजमेर चंद कुटिल प्रवृत्ति का था। उसने पहाड़ी राजाओं को औरंगजेब का भय दिखा कर महसूल देने के लिये सहमत कर लिया। इससे मुगल दरबार में उसने अपने लिये स्थान बना लिया। वह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति अकारण ईर्ष्या रखता था और जानता भी था कि गुरु साहिब को अपने दम पर पराजित नहीं किया जा सकता, इसलिये उसने मुगलों से सहायता की प्रार्थना की। सरहिंद, कांगड़ा, लाहौर और जम्मू के मुगल फौजदार उसकी सहायता को तैयार हो गये। औरंगजेब को अब पूरे पंजाब में एकमात्र चुनौती श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ही दिख रही थी। औरंगजेब ने हुक्म जारी किया कि श्री गुरु

गोबिंद सिंघ जी अपने को पातशाह कहलवाना और राजसी तौर-तरीके अपनाना बंद कर दें, तो ठीक है, अन्यथा उन्हें राज्य से बाहर कर दिया जाये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसका सटीक उत्तर दिया कि वे श्री गुरु नानक साहिब के मार्ग पर चल रहे हैं और इस मार्ग से विचलित नहीं हो सकते। गुरु साहिब जानते थे कि औरंगजेब इस उत्तर से संतुष्ट नहीं होगा, इसलिये उन्होंने संभावित युद्ध की तैयारियां आरम्भ कर दीं। सिक्खों को सदैव तैयार रहने के लिये कहा गया। औरंगजेब और उसके सिपहसालार हिंदू राजाओं के साथ मिल कर गुरु साहिब के विरुद्ध षड़यन्त्र रचते रहे किन्तु टकराने का साहस नहीं कर पा रहे थे। अंततोगत्वा सन् १६९५ के सितंबर महीने में दिलावर खान का पुत्र रुस्तम खान फ़ौज लेकर श्री अनंदपुर साहिब पर कब्ज़ा करने के लिये पहुंचा। वह नदी पार भी नहीं कर पाया था कि गुरु साहिब और सिक्खों ने किले से तीरों की बौछार क़र दी। घबरा कर मुगल फ़ौज भाग गई। इस हार से बौखलाये दिलावर खान ने कांगड़ा के फौजदार हुसैन खान की सहायता माँगी। हुसैन खान ने पहाड़ी क्षेत्रों में तबाही मचा दी। गुलेर रियासत का राजा इतना घबरा गया कि उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से सहायता की प्रार्थना की। कुछ पहाड़ी राजा हुसैन खान के साथ जा मिले थे। गुरु साहिब के भेजे सिक्खों ने वीरता से युद्ध किया और हुसैन खान को मार गिराया। यह 'हुसैनी युद्ध' फरवरी सन् १६९५ में हुआ था। हुसैन खान की मौत से आहत दिलावर खान ने वैशाखी के दिन हमला करना चाहा किन्तु सिक्खों ने उसे भी विफल कर दिया। इस तरह संघर्ष और युद्ध की स्थितियां बराबर बनी रहीं, किन्तु इन सबके चलते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी धर्म-प्रसार के अपने मुख्य मिशन को अत्यंत सुविचारित ढंग से आगे बढ़ा रहे थे।

वह समय आया जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को लगा कि सिक्ख श्री गुरु नानक साहिब के पंथ के सिद्धांतों में पूर्ण परिपक्व हो चुके हैं और धर्म के सभी कर्त्तव्य स्वयं निर्वहन करने को तैयार हैं तो सन् १६९९ की वैशाखी के दिन श्री अनंदपुर साहिब में सिक्खों का एक विशाल समारोह आयोजित किया गया। इस आयोजन में गुरु साहिब ने 'खालसा पंथ' सजाया। इस अवसर पर 'पांच प्यारे' सजा कर गुरु साहिब ने पहले उन्हें 'अमृत' छकाया। उस समय दीवान में उपस्थित लगभग अस्सी हजार सिक्ख 'अमृत-पान' कर 'सिंघ' बने। गुरु साहिब ने इस अवसर पर एक लंबा सम्बोधन किया और खालसा की मर्यादा और कर्त्तव्यों को विस्तार से बताया। अब 'पांच ककारों' से सज कर खालसा की एक विशेष पहचान बन गई। इस पहचान में सभी जातियां, वर्ण, वर्ग विलीन हो गये। सारे भेद मिट गये।

'खालसा पंथ' सजाने के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हिंदू राजाओं को भी 'खालसा पंथ' में शामिल करने का प्रयास किया ताकि मुगलों के दबाव और आतंक से मुक्त एक ऐसा समाज बन सके जिसमें स्वाभिमान के साथ जिया जा सके। इसके लिये वे मंडी रियासत के तीर्थ-स्थान रवालसर भी गये। किन्तु, राजाओं की सुप्त चेतना जाग्रत न हुई। इसके विपरीत वे गुरु साहिब को ही अपने लिये चुनौती समझते रहे।

नवसृजित खालसा का तेज और प्रताप पहाड़ी राजाओं को ईर्ष्या से और भी भर रहा था। उन्होंने मुगलों के साथ मिल कर पुनः षड्यंत्र रचने आरम्भ कर दिये। पहाड़ी राजाओं की संयुक्त फ़ौज बीस हजार थी। सरहिंद के नवाब वजीर खान ने पैंदे खान और दीना बेग की कमान में अपनी दस हजार की फ़ौज भेजी। सन् १७०० के जनवरी महीने में इस मिलीजुली फ़ौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। यह श्री अनंदपुर साहिब का प्रथम युद्ध था। गुरु साहिब के पास लगभग सात हजार सैनिक योद्धा थे। इस युद्ध में घोड़े पर सवार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पैंदे खान को निशाना बना कर ऐसा तीर मारा कि वह ठौर पर चित्त हो गया। उसके जमीन पर गिरते ही सारी फ़ौज भाग खड़ी हुई और यह युद्ध गुरु साहिब ने जीत लिया।

पहाड़ी राजा इस पराजय को सहन नहीं कर पा रहे थे। जब मुगलों ने कोई ख़ास रुचि नहीं ली तो पहाड़ी राजाओं ने स्वयं ही युद्ध की घोषणा कर दी और स्थानीय जातियों की मदद लेकर सन् १७०१ में श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया। सिक्खों को जब पता चला तो वे श्री अनंदपुर साहिब पहुंच गये और वैरी फ़ौज पर पीछे से हमला कर दिया। सामने से भी हमले का जवाब दिया जा रहा था। इससे घबरा कर शाम होते-होते पहाड़ी राजा पीछे हट गये। दूसरे दिन भी उन्होंने हमले का प्रयास किया किन्तु विफल रहे। थक-हार कर पहाड़ी राजाओं ने घेरा डाल दिया जो दो महीने तक चला। जब कोई परिणाम न निकला तो एक मदमस्त हाथी भेज कर उन्होंने किले का द्वार तोड़ने का प्रयास किया। गुरु साहिब ने इस प्रयास को विफल करने के लिये भाई बचित्तर सिंघ को भेजा। भाई बचित्तर सिंघ घोड़े पर सवार होकर मैदान में आये और हाथी के मस्तक पर (नागनी) बरछा ऐसे जोरदार ढंग से मारा कि हाथी बिलबिला गया और चिंघाड़ कर पीछे मुड़ा व तेजी से उस ओर भागने लगा जिधर वैरी फ़ौज खड़ी थी। वह वैरी फौज को ही कुचलता हुआ जा रहा था। इससे वैरी फ़ौज में भगदड़ मच गई और वो पीछे हट गई। यह श्री अनंदपुर साहिब के दूसरे युद्ध की विजय थी।

पहाड़ी राजाओं के मन में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति ईर्ष्या और वैर कम नहीं हुआ था।

प्रोफेसर साहिब सिंघ ने अपनी पुस्तक 'जीवन-वृत्तांत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी' में लिखा है कि पहाड़ी राजा बार-बार मुगलों से सहायता मांगने में भी संकोच कर रहे थे। उनको लगा कि किले में बैठे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और सिक्खों का वे कोई अहित नहीं कर सकते, इसलिये वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को किसी तरह श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर किसी मैदानी क्षेत्र में ले आने के कुचक्र रचने लगे। उन्होंने आटे की एक गाय बनाई और गाय की सौगंध खाते हुए गुरु साहिब को एक पत्र लिखा कि "यदि वे चार दिन के लिए श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर कहीं अन्यत्र चले जायें तो हम कुछ नहीं कहेंगे। इस तरह हमारी इज्जत भी बच जाएगी और व्यर्थ रक्तपात भी रुक जायेगा।" आटे की गाय और पत्र लेकर पम्मा पंडित किसी युक्ति से लोहगढ़ किले के बाहर रख आया। सिक्खों ने जब आटे की गाय और सौगंध का पत्र देखा तो लाकर गुरु साहिब को दिया। गुरु साहिब कभी भी व्यर्थ रक्तपात के पक्ष में नहीं थे और तेग को सदैव अंतिम विकल्प मानते थे। उन्होंने पहाड़ी राजाओं की कसम पर विश्वास कर लिया और श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर निकट के निरमोहगढ़ नामक स्थान पर आ गये। पहाड़ी राजाओं ने पुन: अपना दोहरा चरित्र प्रकट किया और धोखे से गुरु साहिब पर आक्रमण कर दिया। युद्ध होता रहा किन्तु जब उन्हें सफलता मिलती नजर न आई तो सरहिंद के नवाब से सहायता की गुहार की। इस युद्ध में तोपों का भी प्रयोग किया गया। सरहिंद का नवाब भी अपनी फ़ौज लेकर आ पहुंचा। भीषण युद्ध हुआ वैरी गुरु साहिब के निकट तक न पहुंच सके। सिक्खों ने उन्हें भारी क्षति पहुंचाई। यहां से श्री अनंदपुर साहिब वापिस न जाकर गुरु साहिब चलते युद्ध के मध्य सतलुज नदी पार कर बसाली आ गये। बसाली में भी भीषण युद्ध हुआ और गुरु साहिब को विजय प्राप्त हुई।

कुछ दिन बसाली ठहर कर गुरु साहिब सिक्खों सहित श्री अनंदपुर साहिब वापिस आ गये। निराश राजा अजमेर चंद, जो गुरु साहिब के विरुद्ध सभी पहाड़ी राजाओं को एकजुट करने का सूत्रधार था, ने झुकना और संधि करना उचित समझा। उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को कुछ उपहार भेजे। अन्य राजाओं ने भी ऐसा ही किया। इसके पश्चात् लगभग दो वर्ष शांति से व्यतीत हुए। सिक्खों की ताकत बढ़ती गई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को संगठित करने में समय लगाया। जनवरी, सन् १७०३ में गुरु साहिब सिक्खों के साथ सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र गये। वहां से वापिस श्री अनंदपुर साहिब लौटते हुए गुरु साहिब चमकौर साहिब पहुंचे। ठीक इसी समय दो मुग़ल फौजदार सैद बेग और अलफ खान लाहौर से वापिस दिल्ली, पहाड़ी रियासतों से होते

हुए जा रहे थे। अजमेर चंद के मन में फिर पाप जागा। उसने चमकौर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर हमला करने के लिये इन फौजदारों को उकसाया और धन का लालच दिया। सिक्ख संख्या में बहुत कम थे किन्तु बड़ी वीरता से लड़े। सैद बेग गुरु साहिब की दिव्यता से प्रभावित होकर उनसे मिल गया। अलफ खान निराश हो गया और सिक्खों के सामने टिक न सका। गुरु साहिब यहां भी विजयी रहे। पहाड़ी राजाओं की संधि की इच्छा की पोल खुल गई। सैद बेग ने गुरु साहिब के सामने पहाड़ी राजाओं के षड्यंत्रों को उजागर कर दिया। गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब आ गये।

श्री अनंदपुर साहिब में रहते हुए सन् १७०३ में एक समय ऐसा आया जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ कुल आठ सौ शस्त्रधारी सिक्ख ही रह गए थे। यह सूचना जब पहाड़ी राजाओं को मिली तो उन्हें यह अवसर उचित लगा। कहलूर, हंडूर, चंबा, फतेहपुर के राजाओं ने मिल कर श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। सिक्ख किले से बाहर आकर लड़े। संख्या में बहुत कम होने के बाद भी गुरु साहिब ने यह युद्ध भी जीत लिया। सिक्खों की वीरता के आगे पहाड़ी राजाओं की सेनायें भाग खड़ी हुईं।

गुरु साहिब की प्रेरणा और यत्नों से सिक्खों की शक्ति निरंतर बढ़ती जा रही थी। गुरु साहिब का यश चारों ओर फ़ैल रहा था। बार-बार टकराने के बाद भी असफल रहने वाले पहाड़ी राजाओं ने अब कुंठित होकर औरंगजेब की शरण ली और उसे झूठी शिकायतें भेजनी आरम्भ कर दीं। औरंगजेब ने उन शिकायतों पर विश्वास कर दिल्ली से एक बड़े योद्धा सैद खान के नेतृत्व में फ़ौज को पंजाब रवाना कर दिया। सैद खान गुरु साहिब के अनन्य प्रेमी पीर बुद्धू शाह का साला था। रास्ते में वह पीर बुद्धू शाह से मिला भी। पीर बुद्धू शाह से गुरु साहिब की महानता के बारे में सुन कर वह कुछ दुविधा में पड़ गया, किन्तु शाही फरमान तो उसे पूरा करना ही था। श्री अनंदपुर साहिब पहुँच कर उसने २९ मार्च, सन् १७०४ को आक्रमण कर दिया। युद्ध आरम्भ हो गया। यह फसल-कटाई का मौसम था। इस समय गुरु साहिब के साथ मात्र पांच सौ सिक्ख ही मौजूद थे। संख्या कम होने के बावजूद सिक्खों की अपार वीरता और गुरु साहिब का रणनीतिक कौशल देख कर सैद खान स्तब्ध रह गया। वह इतना अभिभूत हुआ कि युद्ध छोड़ कर चला गया। उसके स्थान पर रमजान खान आया। गुरु साहिब के एक तीर ने ही उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया।

औरंगजेब को जब अपने मुख्य सिपहसालार सैद खान द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पक्ष में मैदान छोड़ देने का समाचार प्राप्त हुआ तो उसे गहरा धक्का लगा। पहाड़ी राजाओं से उसे झूठी

रिपोर्टें मिलीं उनसे भी वह आहत और आक्रोशित हो गया। उसने लाहौर, सरहिंद, जम्मू और मुलतान के अपने सूबेदारों को हुक्म जारी कर दिया कि वे स्थानीय लोगों की सहायता से मिलकर एक साथ श्री अनंदपुर साहिब पर हमला करें। संयुक्त फौज ने मई, सन् १७०४ में श्री अनंदपुर साहिब पर हमला कर दिया। प्रेफ़ेसर साहिब सिंघ ने लिखा है कि इसमें मुगल फ़ौज, जेहाद के आशिक और लुटेरा दल के लोग शामिल थे, जो सतुलज नदी के किनारे मिले थे। श्री अनंदपुर साहिब पर हमले आरम्भ हो गये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की रणनीति अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हुई। बाहर लाखों की वैरी सेना थी और गुरु साहिब के साथ मात्र दस हजार सैनिक रहे। पांच-पांच सिक्खों के दस्ते पांचों किलों से निगरानी कर रहे थे। मुगल सैनिक जैसे ही निकट आते सिक्ख शेर की तरह टूट पड़ते और जब तक वे अपने शस्त्र चलाने को तैयार होते, सिक्ख उन्हें काट डालते। युद्ध लगभग एक महीना चला, जिसमें वैरी सेना को भारी नुकसान सहना पड़ा। युद्ध का कोई परिणाम न निकलता देख और बड़ी संख्या में सैनिकों के मारे जाने के बाद वैरी सेना ने रणनीति बदल दी तथा युद्ध रोक कर घेरा डाल दिया। सिक्खों को रसद की आपूर्ति बंद हो गई। सिक्खों ने एक नया ढंग अपनाया। वे छोटे समूहों में जाकर अचानक छापे मारते और वैरी को मार-काट कर उनकी रसद, हथियार आदि उठा लाते। घेरा लंबा हो गया और गुरु साहिब अडोल रहे तो एक चाल चली गई। वैरी ने प्रस्ताव भेजा कि गुरु साहिब कुछ समय के लिये श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें तो शांति स्थापि हो जायेगी, हमारी प्रतिष्ठा बच जायेगी। उनका छुपा मकसद था कि जैसे ही गुरु साहिब और सिक्ख बाहर आयेंगे, उन्हें घेर लिया जायेगा। गुरु साहिब ने उनकी चाल नाकामयाब करने और बेनकाब करने के लिये कहलवा भेजा कि माल-असबाब ले जाने के लिये कुछ खच्चरों का प्रबंध कर दो। खच्चर भेज दिये गये। गुरु साहिब ने रात के अँधेरे में उन खच्चरों के ऊपर जलती मशालें बाँध कर बाहर भेज दिया। जैसे ही खाली खच्चर बाहर आये, ताक में बैठे शत्रु उन पर टूट पड़े। जब खाली खच्चर देखे तो वे भारी शर्मिंदगी में डूब गये। तरह-तरह के दबाव बनाये जाते रहे, सभी विफल रहे। हजारों सैनिकों को गंवाने के बाद भी जब वैरी दल गुरु साहिब का बाल भी बांका न कर सका तथा घेरा डाले हुए लंबा समय व्यतीत हो गया तो एक सैयद एवं एक ब्राह्मण भेज कर कुरान व गाय की कसम खाई गई और कुछ दिनों के लिये श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने का अनुरोध किया गया। गुरु साहिब संत-सिपाही थे। संत पहले थे, सिपाही-योद्धा बाद में। उनकी जंग किसी देश, राज, दौलत की नहीं, धर्म की थी।

उनके प्रत्येक निर्णय, प्रत्येक कदम के केंद्र में धर्म होता था। गुरु साहिब ने गहन सोच-विचार के बाद श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने का निर्णय किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परिवार और सिक्खों के साथ १९ दिसंबर, १७०४ ई. की रात को श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा। चारों ओर दस लाख की शत्रु फ़ौज। उसके बीच से गुरु साहिब और केवल डेढ़ हजार सिक्ख बाहर निकल रहे थे। यह एक ऐतिहासिक रात थी। गुरु साहिब के दल ने अभी कीरतपुर साहिब, जो श्री अनंदपुर साहिब से मात्र पांच मील की दूरी पर है, पार ही किया था कि कहलूर के राजा अजमेर चंद और सरहिंद के नवाब वजीर खान की फ़ौज ने गाय और कुरान की कसमें तोड़ते हुए पीछे से आक्रमण कर दिया। अभी दिन भी नहीं चढ़ा था, धुंधलका था। सिक्खों ने वैरी को पीछे धकेले रखा और सरसा नदी तक पहुंच गये। यहां पर हुए युद्ध में भी वैरी को मुंह की खानी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं मैदान में आये। उनकी तेग ने हाहाकार मचा दिया। सरसा नदी पार करते हुए सिक्खों को भारी क्षति उठानी पड़ी। गुरु साहिब का परिवार बिछड़ गया। अनेक सिक्ख नदी के तेज बहाव में डूब गये। शाम होते-होते जब गुरु साहिब रोपड़ पहुंचे तो वहां पठानों ने घेर लिया, मगर पठान कुछ पलों में ही जान की भीख मांगते हुए भाग खड़े हुए।

२१ दिसंबर, सन् १७०४ की रात थी जब गुरु साहिब चमकौर साहिब पहुंचे और वहां एक कच्ची गढ़ी को अपना ठिकाना बनाया। बिछड़ने और शहीद होने के बाद अब मात्र चालीस सिक्ख गुरु साहिब के साथ बचे थे जो चमकौर की कच्ची गढ़ी में पहुंचे थे। २२ दिसंबर को प्रातः एक ऐसी जंग शुरू हुई जो सारे संसार को स्तब्ध करने वाली व एक महान इतिहास रचने वाली जंग थी। बाहर दस लाख की फ़ौज और कच्ची गढ़ी के अंदर मात्र चालीस सिक्ख तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। दिन आरम्भ होते ही जंग शुरू हो गई। सिक्ख थके-हारे और भूखे-प्यासे थे, शस्त्र भी पूरे नहीं थे। अजमेर चंद और वजीर खान की फ़ौज सारे अस्त्रों से लैस थी, घोड़े, बंदूकें और तोपें भी थीं। इस युद्ध में गुरु साहिब ने ऐसी रणनीति तैयार की कि सारा दिन युद्ध होता रहा किन्तु वैरी फ़ौज गढ़ी के अंदर तक न आ पाई। गुरु साहिब के साहिबजादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी भी शहीद हुए। यह एक ऐसा युद्ध था जिसकी कल्पना करना भी असम्भव था। गुरु साहिब अपराजेय रहे। रात को गुरु साहिब ने गढ़ी छोड़ दी और आगे की ओर प्रस्थान कर गये। युद्ध के अंत में ग्यारह सिक्ख बचे थे जिनमें से आठ सिक्खों को गढ़ी में अगले दिन के युद्ध के लिये तैनात कर दिया गया। तीन अन्य सिक्ख— भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ और भाई मान सिंघ भी

बाहर आये, किन्तु अलग-अलग। उनका गुरु साहिब से मेल दूसरे दिन हुआ। गुरु साहिब चलते हुए मालवा क्षेत्र में आ गये। उधर परिवार से बिछड़े हुए बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तिह सिंघ जी को अपनी हिरासत में लेकर लगातार हार से खीझे सरहिंद के नवाब ने दीवार में जिंदा चिनवा कर शहीद कर दिया। माता गुजरी जी ने प्राण त्याग दिये। वास्तव में गुरु साहिब के श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद घटित हुई एक-एक घटना विस्तृत लेखन का विषय है।

गुरु साहिब माछीवाड़ा से चलते हुए दीना नामक स्थान पर पहुंचे तो गुरु साहिब के बारे में लोगों को पता लगना आरम्भ हो गया। सिक्ख एकत्र होने लगे। यहां से आगे बढ़ते हुए गुरु साहिब कोटकपूरा आ गये। सरहिंद के नवाब को गुरु साहिब के बारे में ज्ञात हो चुका था और वह फ़ौज लेकर निकल पड़ा था। गुरु साहिब ने युद्ध को अपरिहार्य समझ कर अपनी पसंद का स्थान चुना— 'खिदराणे की ढाब'। यहां जब युद्ध आरम्भ हुआ तो वे सिक्ख भी आ मिले जो श्री अनंदपुर साहिब से 'बेदावा' देकर चले आये थे और अब पश्चाताप कर रहे थे। गुरु साहिब ने तीरों की ऐसी बारिश की कि मुगलों के पैर उखड़ गये और वे युद्ध के मैदान से भाग खड़े हुए। पश्चाताप हेतु युद्ध में शामिल होने आये माझा क्षेत्र के ये सभी सिक्ख शहीद हो गये। गुरु साहिब ने कहा कि ये सिक्ख मुक्त हो गये। इस स्थान का नाम 'मुकतसर' पड़ा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रत्येक विजय ने एक अद्भुत इतिहास रचा और धर्म की नींव को सुदृढ़ किया। इसके पश्चात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दमदमा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी शामिल कर उसे सम्पूर्णता प्रदान की। गुरु साहिब बाद में दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान कर गये। गुरु साहिब ने श्री हजूर साहिब, नांदेड़ में ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुगद्दी प्रदान की। इससे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिद्ध किया कि सिक्ख के बल का आधार गुरबाणी है और गुरबाणी ही उसे अजेय बनाती है। धर्म को धारण करना और श्री गुरु नानक साहिब के दिखाये मार्ग पर सदैव बिना विचलित हुए चलते रहना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिखाया। उन्होंने अपना बल खालसा में समाहित कर दिया था। आज भी खालसा सही मायनों में उनका अनुकरण करे तो संसार की कोई भी शक्ति उसे पराजित नहीं कर सकती।

# माता साहिब कौर जी : ख़ालसे की माता के संदर्भ में

*–स. जगदीप सिंघ लतीफ़पुर**

माता साहिब कौर जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के महिल (सुपत्नी) थे और खंडे की धार पर सृजित 'खालसा पंथ की माता' भी थे। माता साहिब कौर जी ने अपने माता-पिता के संकल्प और गुरु-पति के प्रण को अंतिम श्वास तक निभाने के लिए संयम भरा, विशुद्ध जीवन व्यतीत कर स्त्री समाज को आदर्श मार्ग प्रदान किया। माता साहिब कौर जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सिद्धांतानुसार अपने 'नादी पुत्र' खालसा पंथ का योग्य नेतृत्व किया। माता साहिब कौर जी का जीवन-चरित्र एक आदर्श माता का प्रतीक है। माता साहिब कौर जी को दसम पातशाह ने 'ख़ालसा माता' बना कर विशेष पदवी प्रदान की। इस संदर्भ में 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में हवाला प्राप्त होता है :

*तीसर साहिब देवी दारा।*
*तांहि खालसा पुत्र अपारा।*[1].

माता साहिब कौर जी के पिता रुहतास नगर, ज़िला जेहलम (पाकिस्तान) के निवासी थे। माता साहिब कौर जी के पिता भाई रावा और माँ माता जसदेवी गुरु-घर के श्रद्धालु थे। माता साहिब कौर जी 'ख़ालसा माता' बन कर समूचे ख़ालसा पंथ रूपी अपने पुत्रों को अपने रूहानी और सामाजिक कर्त्तव्य पूरे करने के लिए प्रेरित करते रहे। माता साहिब कौर जी ने साहिबज़ादों की परवरिश अपनी संतान जान कर की। माता साहिब कौर जी ने सारी उम्र माता गुजरी जी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और माता सुंदरी जी की आज्ञा के अनुसार पंथ के प्रचार और प्रसार के लिए कार्य किये। माता जी के 'ख़ालसा माता' बनने के संदर्भ में एक गाथा प्रचलित है कि माता साहिब कौर जी ने संतान-प्राप्ति के लिए जब विनती की तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समूचे ख़ालसा पंथ को माता जी की झोली में डाल कर 'ख़ालसा माता' होने का गौरव प्रदान किया। कवि संतोख सिंघ जी ने 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में माता साहिब कौर जी की विनती को इस प्रकार बयान किया है :

*नंम्रि सलाज तरे करि नैन।*
*बिनती सहित कहति मुख बैन।*
*प्रभ जी! इक पुत्र की अभिलाखै।*
*अपर बाषना कोई न राखै।*
*क्रिपा आप की ते मैं पाऊं।*
*स्त्री जन्म अपन सुफलाऊं।*

**रिसर्च स्कालर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला—१४७००२, फोन : ८२८३८-३८३२३*

*जथा अतैं मम सपतनि केरे।*
*चहों तथा मन आपन हेरे।*[२]

माता साहिब कौर जी के मुख से ये शब्द सुन कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने माता जी की झोली में खालसा पंथ डाला :

*सुनि करि श्री मुख ते फुरमायो।*
*भलो मनोरथ रिदे उठायो।*
*कहां मनोरथ इक पुत्र केरे।*
*पुत्र खालसा होयसि तेरे।*
*लाखहु को गणत न आवै।*
*जग मै थिर नित जन्म सु पावै।*
*सकल सिंघ अपने सुत जानो।*
*सुजमु प्रताप बधाइ महानो।*
*पुत्र खालसा तेरे भयो।*
*गोद पाइ तुझ हमने दयो।*
*सहिद प्रताप समेत निहारहु।*
*सदा आनंद बिलंदै धारहु।*[३]

समूह खालसा पंथ को नादी पुत्र के रूप में झोली में डलवाने के बाद माता साहिब कौर जी का सिक्ख संगत में मान-सम्मान और भी अधिक बढ़ गया। गुरु साहिब से यह बख्शिश प्राप्त कर माता साहिब कौर जी समूचे खालसा पंथ की 'धर्म माता' बन गए, क्योंकि "खालसा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की नादी संतान है। नादी का अर्थ है— नाद (उपदेश) द्वारा जिसका गुरु के साथ पुत्र-भाव उत्पन्न होता है। फिर वो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के शब्दों और उपदेश पर चलता हैं। युगों-युगों तक स्थिर रहने वाले खालसा पुत्र की माता बनने से माता साहिब कौर जी का सिक्ख संगत में मान-सम्मान बहुत अधिक बढ़ गया।"[४]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने के बाद ख़ालसा पंथ कई बार नाज़ुक दौर से गुज़रा। ऐसे समय में माता साहिब कौर जी और माता सुंदरी जी ने पंथ का नेतृत्व किया, जिसमें माता साहिब कौर जी ने माता सुंदरी जी के सुयोग्य सलाहकार के तौर पर भूमिका निभाई। श्री दसम ग्रंथ साहिब की बाणी के संपादन और प्रतिलिपियों के कार्य में माता साहिब कौर जी ने विशेष भूमिका निभाई।

माता साहिब कौर जी ने सारा जीवन बाणी का पाठ करते हुए, सुमिरन करते हुए, संगत की सेवा करते हुए व्यतीत किया। जब गुरु साहिब दिल्ली से दक्षिण की ओर गए तो माता साहिब कौर जी तथा भाई साहिब सिंघ जी उनके साथ थे। गुरु साहिब रास्ते में जहाँ भी रुकते, संगत वहां गुरु साहिब के दर्शन को आती। नांदेड़ पहुँच कर माता जी गोदावरी नदी के किनारे 'हीरा घाट' नामक स्थान पर ठहरे। श्री अनंदपुर साहिब की ही भाँति संगत नांदेड़ में एकत्रित होने लगी, संगत के ठहरने और लंगर-पानी का प्रबंध माता साहिब कौर जी किया करते थे। इतिहास के अनुसार नांदेड़ में गुरु जी ने अपना अंतिम समय नज़दीक आता देख कर माता

जी को दिल्ली वापस जाने का हुक्म किया। जब माता जी ने विनती की कि उन्हें गुरु जी के दर्शन कैसे होंगे, तो गुरु साहिब ने माता जी को पाँच शस्त्र भेंट किये और कहा कि इनको ससम्मान अपने पास अपनी रक्षार्थ रखो! इनमें से ही आपको हमारे दर्शन हुआ करेंगे। इसके साथ ही गुरु जी ने अपनी मुहर भी दी और कहा कि इसे भी अपने पास रखो। इस मुहर का इस्तेमाल करने की आज्ञा सिर्फ़ माता साहिब कौर जी को ही दी गई थी। गुरु जी ने नांदेड़ से माता साहिब कौर जी को दिल्ली भेजते समय नेतृत्व के अधिकार प्रदान किये, जिनमें से गुरु जी ने अपनी विशेष मुहर इसलिए दी थी कि माता जी इस मुहर का प्रयोग पंथ के नाम 'हुकमनामे' जारी करने के लिए करें। जब गुरु साहिब दक्षिण भारत में थे तो माता साहिब कौर जी ने माता सुंदरी जी के साथ मिल कर पंजाब और दिल्ली क्षेत्र का नेतृत्व किया। माता जी ने मसंदों के घटिया व्यवहार को देखते हुए उनके साथ मेलजोल रखने से संगत को मना किया। इस सम्बंध में भाई केसर सिंघ छिब्बर लिखते हैं— "दरबार गुरु का माता साहिब देई तख़्त बहे। सिख संगति सभ दर्शन नूं आवण लग्गे।"[५]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परलोक गमन करने के बाद माता साहिब कौर जी माता सुंदरी जी के साथ हर समय उपस्थित रहे। माता जी ने लंगर के प्रबंध में विशेष भूमिका निभाई। "माता साहिब कौर जी के नौ हुकमनामे विभिन्न क्षेत्र की संगत के नाम लंगर के लिए माया (धन, रसद आदि) भेजने के लिए लिखे गए हैं। दो हुकमनामे, जिन सिंघों ने लंगर के लिए माया भेजी थी, उन्हें आशीर्वाद के रूप में भेजे गए। एक हुकमनामा पट्टन शेख फ़रीद में नया कुआँ बनवाने के लिए लिखा गया। इन हुकमनामों के विषय से यह सिद्ध हो जाता है कि माता साहिब कौर जी तथा माता सुंदरी जी का लक्ष्य एक ही था। दोनों 'गुरु का लंगर' चलाने के लिए ही हुकमनामे संगत को भेजते रहे।"[६].

चाहे माता साहिब कौर जी शारीरिक रूप से इस संसार में नहीं हैं, मगर जब तक उनका नादी पुत्र 'खालसा पंथ' संसार पर कायम है, तब तक माता जी का नाम भी संसार में अमर रहेगा।

**संदर्भ-सूची :**


१. डॉ. किरपाल सिंघ (संपा.), श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ में से श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-वृत्तांत कृत महाकवि भाई संतोख सिंघ जी, पृष्ठ १४४

२. डॉ. अजीत सिंघ औलख (संपा.), कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंघ रचित श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ टीका सहित, भाग दशम, पृष्ठ ४८७

३. उपरोक्त

४. सुखजीत कौर, महिंदर कौर (गिल्ल) (संपा.),माता साहिब कौर जी दसम गुरु-महिल, पृष्ठ २२२

५. प्रो. प्यारा सिंघ पद्म (संपा.), भाई केसर सिंघ छिब्बर कृत बंसावलीनामा दसां पातशाहियाँ का, पृष्ठ २१४

६. डॉ. महिंदर कौर (गिल्ल), माता सुंदरी जी, पृष्ठ ७७

# शहीदी-प्रसंग : छोटे साहिबजादे एवं माता गुजरी जी

*–डॉ. मनजीत कौर**

सिक्ख चिंतकों ने कुर्बानी को सिक्ख धर्म में रीड़ की हड्डी सदृश माना है। जहां गुरबाणी प्रेमा-भक्ति को दृढ़ करवाती है, सत्य मार्ग का पथिक बनाती है, वहां शहादत कौम में त्याग एवं कुर्बानी का जज्बा पैदा करती है। किसी एक शायर का ख्याल है :

*कौमां जिउंदीआं सदा कुर्बानियां 'ते,*
*अणख मरे तां कौम है मर जांदी।*
*उस कौम नूं सदा इतिहास पूजे,*
*विपदा हस्स के जो कौम है जर जांदी।*

सिक्खी खंडे की धार से भी तीक्ष्ण है। सिक्ख कौम देश-धर्म हेतु एवं समूची मानवता के कल्याण की अभिलाषा, सिद्धांतों की रक्षा तथा स्वाभिमान के साथ जीने हेतु, संघर्ष करते हुए शहादत प्राप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। दुनिया में इस संदर्भ में इस कौम का कोई सानी नहीं है। शहादत का मरतबा बहुत ऊंचा है। इस संदर्भ में किसी एक शायर ने बहुत खूब कहा है :

*शहीदों की कत्लगाह से क्या बेहतर है काबा?*
*शहीदों की खाक पे तो खुदा भी कुर्बान होता है।*

सिक्ख धर्म में शहादत का बहुत ही उच्च एवं गौरवपूर्ण स्थान है। प्रतिदिन अरदास में शहीद सिंघ-सिंघनियों को अत्यंत श्रद्धापूर्वक स्मरण करना इसका पुख्ता प्रमाण है। इस साधनामय पथ पर चलने हेतु अपना मन और तन गुरु को समर्पित करना होता है। सिक्ख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी का बड़ा प्यारा संदेश है :

*जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥*
*सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥*
*इतु मारगि पैरु धरीजै॥*
*सिरु दीजै काणि न कीजै॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१२)*

सिक्ख धर्म की मर्यादा के अनुसार ईश्वरीय मार्ग के पथिक एवं मानवता से प्रेम करने वाले सत्यवादी मनुष्य की कुर्बानी ही प्रभु-दर पर प्रवान होती है। इस संदर्भ में गुरबाणी की पंक्तियां प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत हैं :

*मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो॥*
*सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो॥* *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५७९)*

हिंदुस्तान की धरती पर पहली शहादत थी– शांति के पुंज, बाणी के बोहित, पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की, जिन्होंने मानवीय सिद्धांतों

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

की रक्षार्थ बलिदान दिया, इसीलिए उन्हें 'शहीदों के सिरताज' भी कहा जाता है। नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भी आज़ाद होकर जीने तथा समूची मानवता की धार्मिक स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए बलिदान दिया। इसके बाद शहादतों का जो सिलसिला प्रारंभ हुआ उससे सिक्ख इतिहास भरा पड़ा है। विश्व भर में सर्वाधिक बलिदान देने वाली इस कौम ने देश की तसवीर और तकदीर ही बदल दी।

ऐसी ही अद्भुत, अद्वितीय, लासानी शहादतों में एक विलक्षण गौरव-गाथा है– 'साका सरहिंद' की, जहां छोटे साहिबजादों एवं माता गुजरी जी की शहादत हुई, जिसके परिणामस्वरूप जुल्मी तख्तो-ताज अर्थात् मुगलों के सिंहासन के परखच्चे उड़ गए।

विश्व इतिहास में धर्म एवं मानव-मूल्यों की रक्षा हेतु अपना सरवंश कुर्बान करने वाले साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जुल्मी सत्ता को समूल नष्ट करने तथा हक, सच एवं न्याय का शासन स्थापित करने को दृढ़ संकल्प थे। परिणामस्वरूप अत्याचारी मुगल शासक किसी भी तरह से गुरु जी के मिशन को सफल न होने देने की उधेड़बुन में दिन-रात लगे हुए थे। इसी तरह के घटनाक्रम में मुगल्लों एवं पहाड़ी राजाओं द्वारा गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़कर स्वतंत्रतापूर्वक जाने के लिए कहा गया। बेशक मुगलिया हुकूमत तथा पहाड़ी राजाओं द्वारा कुरान और पुराण की कसमें खाई गईं, लेकिन गुरु जी उनकी मक्कारियों को बख़ूबी जानते थे। फिर भी हालात को मद्देनजर रखते हुए गुरु जी ने २० दिसंबर, १७०४ ई. को श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ा। तब उनके साथ उनका परिवार तथा गिनती के सिंघ थे।

गुरु जी अपना काफिला लेकर चले। आगे बढ़ते हुए सरसा नदी को पार करना था। सरसा नदी तब उफान पर थी। दूसरी ओर मुगल एवं पहाड़ी हिंदू सेना द्वारा अपनी खाई हुई कसमें तोड़कर पीछे से गुरु जी के काफिले पर जोरदार हमला कर दिया गया। घमासान युद्ध हुआ। गुरु जी के अनेक सिंघ सिपाही बेशकीमती खजाना तथा दुर्लभ साहित्य युद्ध में नष्ट हो गया और अधिकतर सरसा नदी की भेंट चढ़ गया। यहीं पर गुरु जी का परिवार दो भागों में बंटकर आपस में बिछड़ गया। माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादे काफिले से अलग-थलग पड़ गए। उन्हें राह में गुरु-घर का रसोइया गंगू मिल गया, जो उन्हें अपने गांव सहेड़ी (खेड़ी) ले गया। माता जी के पास एक थैली थी, जिसमें सोने व चांदी की कुछ मुहरें थीं। गंगू की नीयत खराब हो गई। जैसे ही रात में माता जी की आंख लगी, उसने धीरे से आकर वह थैली चुरा ली। सुबह उठकर माता गुजरी जी ने गंगू से पूछा, "बेटा, वह थैली तूने संभाल कर रख दी है क्या?" इतना कहने की देर थी कि गंगू भड़क उठा और बोला, "एक तो ऐसी हालत में आपको अपने घर

पर पनाह दी है, दूसरा आप मुझ पर ही चोरी का इल्जाम लगा रही हो!" गंगू नमकहराम निकला। सरकार से इनाम पाने और अपना पाप छुपाने के लिए उसने मोरिंडा कोतवाली में जाकर माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादों की अपने घर में होने की सूचना दे दी। पापी ने उन्हें गिरफ्तार करवा दिया। अगली सुबह कोतवाल ने माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादों को सरहिंद के सूबेदार वजीर खान के पास पेश कर दिया। वहां उन्हें शीत ऋतु की बर्फीली रात्रि में 'ठंडा बुर्ज' में कैद कर रखा गया और अगले दिन सूबा सरहिंद वज़ीर खान के समक्ष पेश होने को कहा गया। उन्हें न खाने को और न ही ओढ़ने को कुछ दिया गया। साहसी व धैर्य की प्रतिमा, अकाल पुरख पर अटूट विश्वास रखने तथा हर परिस्थिति में उसकी रजा में राजी रहने वाली महान शख्सियत माता गुज़री जी रात भर अपने नन्हें-नन्हें लाडले पोतों को अपने स्नेह के आंचल में समेटकर सुलाने का यत्न करती रहीं और लोरियों के रूप में सिक्ख इतिहास की साखियां सुनाती रहीं।

सुबह हुई। दोनों साहिबजादों को जगाया, तैयार किया और बड़े प्यार से समझाया कि "तुम महान दादा और शूरवीर पिता-गुरु के शेर बच्चे हो। देखना, जालिमों की कोई भी चाल, उनका कोई भी भय अथवा लालच तुम्हें सत्य के मार्ग से विचलित न करने पाये। अपने पिता-गुरु तथा धर्म की आन-बान-शान को बरकरार रखने हेतु जरूरत पड़े तो अपनी जान भी न्यौछावर कर देना।" इतने प्यार से नन्हें राजदुलारों को समझाने वाली दादी मां का एक-एक शब्द उनके अंदर फौलादी ताकत भरता गया और वे अपनी दादी मां को कुछ इस अंदाज में आश्वासन देते गए :

*कहीं पर्वत झुके भी हैं? कहीं दरिया रुके भी हैं?*
*नहीं, हम झुक नहीं सकते! नहीं, हम रुक नहीं सकते!*

इसी दौरान सिपाही साहिबजादों को लेने आ गए। माता गुजरी जी ने प्यार से दोनों साहिबजादों की पीठ थपथपाई। उनके इरादों को और मजबूत करते हुए, दोनों साहिबजादों को सिपाहियों के साथ भेज दिया। दूर जाते हुए उन्हें निहारती रहीं और फिर ईश्वर के चरणों में उनके धर्म पर अडिग रहने हेतु अरदास करती रहीं।

मात्र ८ और ५ वर्ष के साहिबजादों के इरादे चट्टान से भी अधिक मजबूत निकले। कचहरी ले जाते समय सिपाहियों द्वारा उन्हें इस प्रकार समझाया गया कि नवाब सूबा सरहिंद को झुक कर सलाम करना। जिन साहिबजादों को जन्म से ही धर्म हेतु न्यौछावर होने की घुट्टी मिली हो, दादी मां की लोरियों में से सिक्ख इतिहास की शिक्षा मिली हो, भला उन्हें धर्म के मार्ग से कौन विचलित कर सकता था! कचहरी में प्रवेश करते ही दोनों बाल शूरवीरों ने फतेह गजाई– "वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह॥" सूबा सरहिंद आश्चर्यचकित और क्रोधित हुआ। सर्वप्रथम

साहिबजादों को धर्म-मार्ग से विचलित करने हेतु कई प्रकार के प्रलोभन दिए गए। असफल रहने पर झूठी कहानियां गढ़कर डराने का प्रयास किया गया कि तुम्हारे पिता जी और दोनों बड़े भाई चमकौर के युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। इस पर छोटे साहिबजादों ने बड़े साहस के साथ जवाब दिया कि "इस संसार में कौन है जो हमारे पिता-गुरु को खत्म कर सके?" इस वार्तालाप को कवि संतोख सिंघ ने बखूबी कलमबद्ध किया है :

*साहिबजादो पिता तुहारा।*
*गढ़ चमकौर घेर गहि मारा।*
*तहि तुमरे दै भ्रात प्रहारे।*
*संगी सिंघ सकल सो मारे।*

साहिबजादों का निर्भयतापूर्वक जवाब था :

*श्री सतिगुरु जो पिता हमारा।*
*जग महि कौन सके तिंह मारा?*
*जिम आकाश को किआ कोई मारहि।*
*कौन अंधेरी को निरवारहि।*

सूबा सरहिंद के दुष्ट इरादों पर पानी फिर गया। आगबबूला हुआ नवाब उस दिन भूखे-प्यासे साहिबजादों को ठंडा बुर्ज में वापस भेज देता है ताकि वे आज का सारा वृत्तांत अपनी दादी मां को सुनाएं और किसी तरह दादी मां इन्हें इसलाम कबूल करने की शिक्षा दे सके।

अगले दिन पुन: कचहरी में साहिबजादों को पेश किया गया। उन्हें फिर से कई तरह के प्रलोभन दिए गए और बुरी तरह से डराया-धमकाया गया। इस्लाम कबूल करवाने हेतु सूबा सरहिंद द्वारा हर चाल चली गई, किंतु साहिबजादे नहीं माने। नवाब की हर बात को साहिबजादे मुस्कुराते हुए यूं खारिज कर देते जैसे उसकी किसी बात का कोई वजूद ही न हो। जब उन्हें मार देने की बात कह कर बुरी तरह से डराने-धमकाने का प्रयास किया गया तो नन्हें साहिबजादों के चेहरे भी तमतमा उठे। भरी कचहरी में गर्जना हुई– "हमें धर्म-परिवर्तन हरगिज स्वीकार नहीं! हमारे पूजनीय दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने जब धर्म परिवर्तित नहीं किया तो हम कैसे धर्म-परिवर्तन कर सकते हैं! हमें भी देश-धर्म हेतु शहीद होना आता है!" साहिबजादों की बहादुरी से नवाब वजीर खान और भड़क उठा। उसने मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद खान को उकसाया कि "तुम्हारे भाई और भतीजे की मौत का कारण इन साहिबजादों के पिता ही तो हैं। अब शुभ अवसर है इनसे बदला लेने का। इन्हें मृत्यु-दंड देकर अपने भाई व भतीजे की मौत का बदला ले लो!" मलेरकोटला के नवाब ने मासूमों से बदला लेने से साफ मना कर दिया और कहा, "ये दूध पीते बच्चे हैं। इसलाम इस बात की इज़ाजत नहीं देता। इन्हें मारना कायरता है और पाप भी!" कवि अल्लाह यार खान योगी के शब्दों में :

*बदला ही लेना होगा, तो हम लेंगे बाप से।*
*महफूज रखे हमको खुदा, ऐसे पाप से।१०४।*
*(शहीदानि-वफा)*

इसके विपरीत सोच वाला दुष्ट सुच्चा नंद सूबा सरहिंद को भड़काने व उकसाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहा था। वह बोला, " ये सांप के बच्चे हैं जनाब ! इन्हें जल्द से जल्द खत्म कर देना चाहिए, नहीं तो बड़े होकर घातक सिद्ध होंगे। इन्हें जिंदा छोड़ना समझदारी नहीं है।" सूबा सरहिंद ने दीवान सुच्चा नंद की बातों में आकर क़ाज़ी को साहिबजादों के खिलाफ फतवा जारी करने का आदेश दिया। क़ाज़ी ने फतवा जारी किया कि "इन्हें दीवार में जिंदा चिनवा दिया जाए।" यह सब सुनकर साहिबजादे बेखौफ रहे और मंद-मंद मुस्कराते हुए कुछ इस अंदाज में बोले :

*दस्स मरण तों सूबिआ डरना की?*
*जान तूं मंगें, असां रखी तली 'ते,*
*इस तों वद्ध तूं करना की?*
*समझ न सानूं बाल निआणे।*
*कौमी शहीद असीं हां पुराणे।*
*आरियां हेठां हस्सदे रहे हां,*
*इट्टां दुहां तों डरना की?*
*इट्टां विच छिपा दे सानूं!*
*दादा छेती मिला दे सानूं!*
*वीरां बाजों दिल नहीं लगदा,*
*बहुता विछोड़ा जरना की?*

ठंडे बुर्ज में भाई मोतीराम महिरा ने छोटे साहिबज़ादों तथा माता गुजरी जी को दूध पिलाकर उनकी सेवा की, वो भी अपने परिवार की जान जोखिम में डालकर, अपनी सारी दौलत पहरेदारों को देकर। इसीलिए तो कहा गया है :

*धंन मोती जिस पुंन कमाया।*
*गुरु लालां ताईं दुद्ध पिलाया।*

अगली सुबह सिपाही साहिबजादा बाबा जोरावर सिंघ जी एवं बाबा फतिह सिंघ जी को लेने पहुंच जाते हैं। दादी मां अपने राजदुलारों को दुलारती हैं, बार-बार निहारती हैं, अपने हाथों से तैयार करती हैं। माता गुजरी जी का साहिबजादों से बिछड़ने का समय आ गया। उस करुणा भरे वृत्तांत और दिल दहला देने वाली तसवीर को कवि अल्ला यार खान योगी ने इस प्रकार कलमबद्ध किया है :

*जाने से पहले आओ, गले से लगा तो लूं।*
*केसों में कंघी कर दूं जरा, मुंह धुला तो लूं।*
*प्यारे सरों पर नन्हीं सी कलगी सजा तो लूं।*
*मरने से पहले तुमको दूल्हा बना तो लूं।७२।*

*(शहीदानि-वफा)*

छोटे साहिबजादे कचहरी ले जाए गए। दीवार में चिने जाने की तैयारी शुरू हुई। दोनों साहिबजादों को दीवार में खड़ा कर दिया गया। एक बार फिर वही शर्तें दोहराई गईं। साहिबजादों ने पूर्व की भांति सब कुछ ठुकरा दिया।

इसलाम भी कहां मासूमों को शहीद करने की इजाजत देता है! इसीलिए, फतवा जारी करने के पश्चात भी कोई जल्लाद यह महापाप करने के लिए तैयार न हुआ। अंततः दिल्ली के शाही जल्लाद– साशल बेग एवं बाशल बेग, जो अपने एक

मुकद्दमे के संदर्भ में काल कोठरी में कैद थे, उन्होंने अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु, बरी होने की शर्त पर यह घोर पाप करने की सहमति जताई।

दीवार की चिनाई शुरू हुई। साहसी शेर बच्चे तनिक भी घबराए नहीं। जब साहिबजादों को दीवारों ने ढक लिया तो यकायक दीवार गिर पड़ी। मानो दीवार भी इस घोर पाप की भागीदार न बनना चाह रही हो! बेहोशी की हालत में ईंटों के ढेर पर गिरे पड़े छोटे साहिबजादों के श्वास अभी चल रहे थे। क़ाज़ी का संकेत पाकर जल्लादों ने मासूमों की छाती पर घुटने रखकर, खंजर के वार से साहिबजादों का गला रेत कर उन्हें शहीद कर दिया। उधर साहिबजादों की शहादत का समाचार पाकर माता गुजरी जी भी शहीद होकर परलोक गमन कर गईं।

दीवान सेठ टोडर मल्ल जी गुरु-घर के अत्यंत श्रद्धालु थे। जब उन्हें खबर मिली कि छोटे साहिबजादों को अत्यधिक कष्ट देकर शहीद कर दिया गया है तथा माता गुजरी जी भी शहीद हो गई हैं और हुकूमत ने उनका दाह-संस्कार करने पर रोक लगा दी है, तो वे अपनी सारी धन-दौलत लेकर सूबा की कचहरी में पहुंचे। जब दीवान टोडर मल्ल जी ने साहिबजादों एवं माता गुजरी जी के अंतिम संस्कार हेतु उनके मृतक शरीर मांगे तो वजीर खान ने पहले तो साफ़ मना कर दिया, मगर जब उसे पता चला कि दीवान टोडर मल्ल जी इसकी मुंह मांगी कीमत अदा करने को तैयार हैं तो उसने शर्त रखी कि यदि तुम दाह-संस्कार हेतु जमीन चाहते हो तो स्वर्ण मुद्राएं बिछाकर जमीन खरीद सकते हो। दीवान टोडर मल्ल जी ने शर्त कबूल की और दुनिया की सबसे महंगी जमीन खरीद कर माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबजादों का अंतिम संस्कार किया। धन्य हैं गुरु के ऐसे सिक्ख, जिन्होंने इस पावन कार्य हेतु अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया।

बेमिसाल शहादत का संपूर्ण वृत्तांत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को भाई नूरा माही ने सुनाया। गुरु साहिब ने एक ही सवाल किया, "भाई नूरा! सच-सच बताना, साहिबजादे घबराए तो नहीं! विचलित तो नहीं हुए!" जवाब मिला, "नहीं सच्चे पातशाह! वे दोनों अंतिम सांस तक बेखौफ रहे और कचहरी में भी 'फतह' के जयकारे लगाते रहे।" गुरु जी ने परमात्मा का शुक्रिया अदा किया और कहा कि तेरी अमानत तेरे तक पहुंच गई है। साथ ही तीर की नोक से घास के एक पौधे की जड़ को उखाड़ते हुए कहा कि अब मुग़ल शासन की जड़ भी जल्द ही उखड़ जाएगी। यकीनन बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने १७१० ई. में सरहिंद पर फतह प्राप्त कर इस कथन को अक्षरक्ष: सत्य सिद्ध किया :

*योगी जी इसके बाद हुई थोड़ी देर थी।*
*बस्ती सरहिंद शहर की ईंटों का ढेर थी।११०।*

*(शहीदानि-वफ़ा)*

# चमकौर साहिब का बेमिसाल युद्ध

*–ज्ञानी जसमेर सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का चमकौर की कच्ची गढ़ी में ऊंची जगह पर बैठ कर अपने चालीस सिंघों और दो साहिबज़ादों— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी को साथ लेकर मुगल सरकार की फौज के साथ युद्ध करना संसार के इतिहास में अद्वितीय एवं निराली शौर्य-गाथा है। गुरु साहिब ने बाईधार के हिंदू पहाड़ी राजाओं और मुगलों की खाई हुई कसमों का एतबार कर आधी रात के समय श्री अनंदपुर साहिब का किला अनंदगढ़ खाली कर दिया था। मुगल बादशाह औरंगज़ेब ने कुरान की कसम खाकर और एक चिट्ठी गुरु साहिब को भेज कर कहा था कि गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ दें तो उनको बाहर जाने के लिए रास्ता दिया जाएगा। बाईधार के पहाड़ी हिंदू राजाओं ने गाय की कसम खाकर गुरु साहिब को भरोसा दिया था कि वे श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें तो उनका पीछा नहीं किया जाएगा। गुरु साहिब ने मुगलों और बाईधार के पहाड़ी राजाओं की सौगंधों पर एतबार कर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा था। गुरु साहिब अपने परिवार, माल-असबाब, कीमती ग्रंथों और सिंघों सहित अभी कीरतपुर साहिब ही निकले थे कि मुगल जरनैलों और पहाड़ी राजाओं की संयुक्त फौज ने गुरु साहिब पर हमला कर दिया। मुगलों और पहाड़ी राजा अपनी खाई कसमें भुला कर अपने किए वादे से पलट गए। मुगल फौज का यह हमला शाही टिब्बी (पहाड़ी) के स्थान पर हुआ । उस समय गुरु साहिब के साथ लगभग डेढ़ हज़ार सिंघ थे । भाई उदे सिंघ ने शत्रु फौज का डट कर मुकाबला किया। खालसे का दल शत्रुओं के साथ लड़ता हुआ चला जा रहा था। सिंघ शत्रुओं को मार कर आगे बढ़ते गए। गुरु साहिब जब सरसा नदी के किनारे पहुंचे, उस समय अमृत वेला हो गया था। पौष महीना, कड़ाके की ठंड थी। वर्षा हो रही थी। सरसा में बाढ़ आई हुई थी। गुरु साहिब ने सरसा के

**खालसा हाऊस, गुरुद्वारा साहिब कालोनी, वार्ड नं: ६, बडाला रोड, खरड़, ज़िला साहिबजादा अजीत सिंघ नगर।*

किनारे सिंघों के पहरे में हर रोज़ की तरह अमृत बेला में नितनेम की बाणियों का पाठ किया और 'आसा की वार' का कीर्तन हुआ। गुरु साहिब ने जंग के अति भयानक समय में भी नित्तनेम नहीं छोड़ा। सरसा नदी पर भयानक युद्ध हुआ । बहुत-से सिंघ सरसा नदी के बहाव में बह गए। तेज़ पानी में घोड़ों की पेश नहीं जाती थी। गुरु साहिब ने तुर्कों को रोकने के लिए सिंघों के जत्थे सरसा नदी के किनारे खड़े कर दिए। सरसा नदी पर गुरु साहिब का परिवार बिछड़ गया। उनका परिवार तीन हिस्सों में बंट गया। गुरु साहिब ने भाई मनी सिंघ जी से कहा कि माता सुंदर कौर जी और माता साहिब कौर जी को दिल्ली ले जाएं। भाई मनी सिंघ जी गुरु-महिलों सहित हरिद्वार के रास्ते दिल्ली पहुंचे और भाई जवाहर सिंघ के घर ठहरे थे।

गुरु साहिब के दोनों छोटे साहिबज़ादे— बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी अपनी दादी माता गुजरी जी के साथ सरसा नदी के किनारे चले जा रहे थे। उनको गुरु-घर का रसोइआ गंगा राम (गंगू) मिल गया। वह माता जी और दोनों छोटे साहिबज़ादों को अपने गांव खेड़ी (सहेड़ी), जो मोरिंडा के नज़दीक था, ले गया। सरसा नदी के किनारे खालसा फौज और मुगलों के बीच घमासान युद्ध हुआ। भाई उदे सिंघ मुगल फौज को आगे बढ़ने से रोकते हुए सरसा के युद्ध में अनेक तुर्कों को मार कर शहीद हो गए। भाई उदे सिंघ के शहीद होने पर शत्रु फौज ने सिंघों को घेरा डाल लिया। भाई जीवन सिंघ बड़ी बहादुरी के साथ आगे बढ़कर लड़े। भाई जीवन सिंघ ने शत्रु फौज का घेरा तोड़ दिया और इस युद्ध में शहीद हो गए।

गुरु साहिब सरसा नदी पार कर सिंघों सहित रोपड़ आए। सामने रोपड़ के पठान आप जी का रास्ता रोके खड़े थे। सिंघों का रोपड़ के पठानों के साथ घोर युद्ध हुआ। सिंघों ने रोपड़ के युद्ध में अनेक पठानों को मार गिराया। गुरु साहिब ने एक रात रोपड़ में गुजारी। रोपड़ से अगले दिन गुरु साहिब गांव बाहमण माजरा गए । फिर बाहमण माजरा से गांव बूरा माजरा पहुंचे। गांव बूरा माजरा से दुग्घरी थेह पर कुछ देर ठहरे। दुग्घरी से गुरु साहिब संध्या के समय चमकौर की दक्षिण दिशा में एक बाग में जा ठहरे। गुरु साहिब के साथ इस समय ४० सिंघ और दो बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी तथा

बाबा जुझार सिंघ जी थे। गुरु साहिब सिंघों के साथ चमकौर साहिब की दक्षिण दिशा में जिस बाग में ठहरे थे वहां अब गुरुद्वारा दमदमा साहिब सुशोभित है। यहां बैठकर गुरु साहिब ने सिंघों के साथ अगले दिन होने वाले युद्ध के बारे में विचार-विमर्श किया था । इस समय सूर्य अस्त हो चुका था। गुरु साहिब ने चमकौर साहिब के चौधरी बुधी चंद को अपने पास बुलाया और उसे अपनी हवेली देने के लिए कहा। चौधरी बुधी चंद ने गुरु साहिब की अच्छी खातिरदारी की। उसने अपनी हवेली गुरु साहिब को सौंप दी। चौधरी बुधी चंद की इस हवेली की दीवारें ऊंची थीं। इस हवेली को 'कच्ची गढ़ी' कहा जाता था। सिंघ कच्ची गढ़ी में मोर्चे लगा कर बैठ गए। सिंघों के चेहरे दमक रहे थे और हौसले बुलंद थे। वे मौका तलाश रहे थे कि मुगल फौजदार और पहाड़ी राजा, जिन्होंने खालसे के साथ धोखा किया है, यदि उनके सामने आ जाएं तो वे इन दुष्टों को मार कर अगली दुनिया में पहुंचा दें। गुरु साहिब ने सिंघों को गढ़ी के दरवाज़े के आगे इस ढंग से खड़ा किया था कि शत्रु के लश्कर को यह पता न चल सका कि गढ़ी के अंदर कितने सिंघ हैं। दुश्मन, सिंघों की संख्या के बारे में सही जानकारी न लगा सका । गुरु साहिब का गढ़ी के दरवाज़े को बचाने के लिए सिंघों को खास ढंग से गढ़ी के दरवाज़े के सामने तैनात करना और ऊंची जगह पर जाकर गढ़ी की मोर्चाबंदी करना सिद्ध करता है कि गुरु साहिब सुयोग्य, प्रवीण और सुलझे हुए जरनैल थे। फिर गढ़ी ऊंची जगह पर थी। ऊपर से चारों तरफ दिखाई देता था। दुश्मनों को नीचे ही रोका जा सकता था । गुरु साहिब अपने दोनों साहिबज़ादों सहित गढ़ी की ऊपरी अटारी में चले गए। महान तजुर्बेकार जरनैल वह होता है जो खतरे के समय युद्ध के कठिन अवसर पर सही फैसला कर सके । गुरु साहिब युद्ध-कला में प्रवीण थे और महान तजुर्बेकार जरनैल थे। उन्होंने खतरनाक अवसर में सही फैसला कर बढ़िया ढंग से मोर्चाबंदी की।

गुरु साहिब का बहुमूल्य साहित्य— धार्मिक और ऐतिहासिक ग्रंथ, सरसा नदी के किनारे हुए युद्ध में पानी में बह गए थे। 'विद्यासागर ग्रंथ', जिसे 'विद्याधर ग्रंथ' भी कहा जाता है, वह भी सरसा नदी में बह गया था। श्री अनंदपुर साहिब की तरफ से गुरु साहिब का पीछा करती आ रही फौज ने सरसा नदी का पानी उतर जाने पर सरसा नदी को पार

कर लिया । दिल्ली से चली हुई ताज़ा मुगल फौज गुरु साहिब को पकड़ने के लिए श्री अनंदपुर साहिब की तरफ जा रही थी। इस फौज को रोपड़ से पहले रास्ते में पता चला कि गुरु साहिब सिंघों सहित चमकौर साहिब चले गए हैं। इस तरह सारी फौज ने अपना रुख चमकौर साहिब की तरफ कर लिया। दिल्ली से आ रही मुगल फौज भी चमकौर साहिब पहुंच गई। रात का अंधेरा हो जाने पर मुगल फौज ने चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी को चारों तरफ से घेर लिया।

अगले दिन का सूर्योदय हुआ। सूबा सरहिंद वज़ीर खान, सूबा दिल्ली जाफर बेग, लाहौर का सूबा ज़बरदस्त खान तथा पहाड़ी राजाओं ने आपस में सलाह की कि एक एलची गढ़ी में गुरु साहिब के पास भेजा जाए। यह एलची काज़ी था। उसने गुरु साहिब को संबोधित होते हुए कहा— "गुरु साहिब जी! अब आप शाही फौज के घेरे में आ चुके हो। कई मीलों तक चारों तरफ लंबा घेरा पड़ गया है। आप मुट्ठी भर सिंघों के साथ मुगल लश्कर का मुकाबला नहीं कर सकोगे। सभी मुगल फौजदारों की राय है कि आप अपने सिंघों सहित हथियार फेंक दो और अपने आप को शाही फौज के हवाले कर दो।" गुरु साहिब ने कहा कि एसा कदाचित नहीं हो सकता।

चमकौर साहिब की धरती पर अजीब किस्म का युद्ध हुआ। एक तरफ चमकौर की कच्ची गढ़ी में चालीस सिंघ, गुरु साहिब के दो बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी हैं, वे भी भूखे-प्यासे और थके हुए। दूसरी तरफ लाखों की संख्या में मुगल फौज थी, जिनमें पहाड़ी राजाओं की सेना भी थी । शत्रु की फौज के पास अपने समय के बढ़िया हथियार थे। मुगल फौज और पहाड़ी राजाओं की फौज ने चमकौर की कच्ची हवेली को घेर लिया। सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि गुरु साहिब अपने आप को मुगल फौज के हवाले कर दें और अपने साथियों को साथ लेकर गिरफ्तार हो जाएं। ढिंढोरे के जवाब में गुरु साहिब ने गढ़ी के ऊपर से तीरों की वर्षा करनी शुरू कर दी। शत्रु की फौज ने भी खूब तीर छोड़े, परंतु गढ़ी के निकट कोई न पहुंचे। मुगल जरनैल नाहर खान सीढ़ी लगा कर गढ़ी पर चढ़ने लगा। जब उसने अपना सिर ऊपर उठाया, गुरु साहिब के एक तीर ने उसका अंत कर दिया। नाहर खान की मौत के बाद गनी

खान गढ़ी की दीवार पर चढ़ने लगा। जब उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो गुरु साहिब ने गुर्ज मार कर उसका सिर फाड़ दिया। गनी खान नीचे गिर गया। एक अन्य जरनैल ख्वाजा महमूद अली ने जब अपने साथियों को मरते हुए देखा तो वह भाग कर दीवार के पीछे होकर जान बचा गया। गुरु साहिब ने उसके डरपोक होने के कारण उसे 'ख्वाजा मरदूद' कहा है। ख्वाजा मरदूद को संबोधित कर लिखा है कि यदि तू मेरे सामने आ जाता तो मैं तुझे भी एक तीर प्रदान कर देता और तेरा जन्म-मरण कट जाता, परंतु तू दीवार के पीछे कायर बन कर जान बचा गया। गुरु साहिब के अपने शब्द 'ज़फ़रनामा' में हैं :

*कि आं ख्वाजह मरदूद जि सायह दीवार ॥*
*ब मैदां निआमद ब मरदानह वार ॥३४॥*
*दरेगा अगर रूइ ओ दीदमे ॥*
*ब यक्क तीर लाचार बखशीदमे ॥३५॥*

सूबा सरहिंद वज़ीर खान ने शाही फौज को एक ही बार में गढ़ी पर हमला करने के लिए कहा । गुरु साहिब ने मुगल फौज के मुकाबले के लिए पांच-पांच सिंघों के जत्थे गढ़ी से बाहर भेजने शुरू कर दिए। गुरु साहिब ने गढ़ी को बचाने के लिए गढ़ी की हर एक दीवार के आगे दो-दो सिंघ खड़े किए हुए थे। दो सिंघ गढ़ी के दरवाज़े की रक्षा कर रहे थे। गुरु साहिब खुद गढ़ी की ऊपरी छत पर दोनों साहिबज़ादों सहित बैठे थे। वे ऊपर से शत्रु-फौज पर तीर छोड़ रहे थे। सिंघों ने गढ़ी से बाहर आकर आगे बढ़ रही फौज को पीछे की तरफ धकेल दिया। युद्ध का मैदान गरम था । लोहे से लोहा टकरा रहा था। हज़ारों जवान लहूलुहान होकर मैदान में गिर रहे थे।

जब पांच सिंघों का भेजा जत्था शत्रु को मार कर शहीद हो गया, फिर गुरु साहिब ने पांच सिंघों का एक और जत्था युद्ध के मैदान में भेजा। वे पांच सिंघ भी अनेक शत्रुओं को मार गिराते हुए शहाद प्राप्त कर गए। फिर सूबा सरहिंद वज़ीर खान ने अपने जरनैलों— फौजदार हिदायत खान, फौजदार इस्माइल खान, फौजदार खलील खान, फौज़दार सुलतान खान, फौजदार फौलाद खान, फौजदार जहान खान, फौज़दार भूरे खान और फौजदार आसमान खान को हुक्म दिया कि वे सभी एक साथ मिलकर गढ़ी पर ज़ोरदार हमला करें। इस ज़ोरदार हमले को रोकना बहुत कठिन था। सिंघों ने गुरु साहिब से विनती की— "सतिगुरु जी! आप अब अपने

साहिबज़ादों को साथ लेकर गढ़ी से बाहर चले जाओ। हम लोग आखिरी दम तक लड़ते रहेंगे।" गुरु साहिब ने सिंघों से कहा-- "आप कौन-से साहिबज़ादों की बात करते हो? आप सभी मेरे साहिबज़ादे हो।" गुरु साहिब का यह जवाब सुनकर सिंघ चुप हो गए। इसी समय साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी ने गुरु-पिता जी से युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी। गुरु साहिब ने बाबा अजीत सिंघ जी को शत्रुओं के साथ लड़ने के लिए मैदान में भेजा। गुरु साहिब ने अपने सुपुत्र को शस्त्रों से सजाकर, प्रोत्साहन देकर फतह बुलाई और उन्हें जंग के मैदान में भेजा। बाबा अजीत सिंघ जी ने जंग के मैदान में जाकर शत्रुओं को ललकार कर मारा। बाबा अजीत सिंघ जी ने जो शब्द जंग के मैदान में कहे उन शब्दों को मिर्ज़ा मुहम्मद अब्दुल गनी ने अपने किस्से 'जौहरी तेग' में इस तरह बयान किया है :

*नाम का अजीत हूं, जीता न जाऊंगा।*
*जीता गया तो लौट कर, जीता न आऊंगा।*

साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी ने युद्ध के मैदान में जाकर भगदड़ मचा दी । साहिबज़ादे ने तीरों के साथ शत्रुओं की छाती छलनी कर दी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गढ़ी के ऊपर से साहिबज़ादे को लड़ते हुए देख रहे थे। जब साहिबज़ादे के भत्थे में से तीर खत्म हो गए तो उन्होंने नेज़ा चलाना शुरू कर दिया। तुर्क तौबा-तौबा कर उठे। इनके साथ युद्ध में आए सिंघों में से भाई मुहकम सिंघ जी (पांच प्यारों में से एक) ने दुश्मन दल को चीर कर रख दिया। वे दुश्मन दलों को खदेड़ कर दूर तक ले गए। बाकी सिंघ शत्रु के साथ जूझते हुए शहीद हो गए थे। जब साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी युद्ध लड़ रहे थे, उस समय उन्होंने एक मुगल सिपाही को ज़ोर से नेजा मारा। उस मुगल सिपाही ने लोहे की वर्दी (बखतर) पहनी हुई थी। साहिबज़ादे का नेजा उस सिपाही की बखतर में घुस गया। नेजे की नोक टूट गई। मुगलों द्वारा मारे नेजे से साहिबजादे का घोड़ा जख़्मी हो गया। फिर बाबा अजीत सिंघ जी पैदल हो गए। नेजा टूट जाने पर उन्होंने कृपाण खींच ली और कृपाण से शत्रु पर वार करने लगे। शत्रु इकट्ठा होकर आप पर टूट पड़े। आप जी शत्रु के साथ जूझते हुए शहीद हो गए। गुरु साहिब ने अपने सुपुत्र की शहादत को खुद आंखों से देखा। उन्होंने सुपुत्र के शहीद होने पर 'जयकारा' छोड़ा। आप जी की शहादत सूरज छिपने से कुछ समय पहले हुई थी।

अपने बड़े भाई बाबा अजीत सिंघ जी की शहादत के बाद बाबा जुझार सिंघ जी ने कलगीधर पिता से युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी। कलगीधर पातशाह ने बाबा जुझार सिंघ जी को शस्त्र पहनाए, शीश पर कलगी सजाई । आशीर्वाद देकर कहा— "पुत्र ! जंग में जाओ, दुष्टों को मार कर देश-धर्म की विजयी पताका के वाहक बनो।" आप जी ने साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी को फतहि बुलाकर पांच सिंघों के साथ जंग के मैदान में भेजा। पांच सिंघों में से दो सिंघ— भाई हिम्मत सिंघ जी और भाई साहिब सिंघ जी पांच प्यारों में से थे। साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी के युद्ध के मैदान में आने से युद्ध फिर भड़क उठा। बाबा जुझार सिंघ जी ने युद्ध के मैदान में जाकर मुगलों को ललकारा। 'सति श्री अकाल' के जयकारों से आसमान गूंज उठा। बाबा जुझार सिंघ जी ने जोश में आकर कृपाण से मुगलों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। साहिबज़ादे के साथ आए पांच सिंघ, शत्रुओं पर बाज़ की तरह झपट पड़े। आखिर साहिबज़ादे के साथ आए सिंघ मुगल सेना आदि के साथ जूझते हुए शहीद हो गए। गुरु साहिब गढ़ी के ऊपर से शत्रु दलों पर तीर छोड़ रहे थे। साहिबज़ादा तीरों की ओट में आगे बढ़ रहे थे। गुरु साहिब अपने सुपुत्र को लड़ते हुए देख रहे थे। साहिबज़ादा भी दुश्मनों के दल के साथ जूझते हुए शहीद हो गए। सूरज छिप गया था। गुरु साहिब ने अपने सुपुत्रों के शहीद होने पर 'जयकारा' छोड़ा। उन्होंने अकाल पुरख का शुक्रिया अदा किया।

रात हो जाने पर युद्ध बंद हो गया। गुरु साहिब ने 'रहरासि साहिब' का पाठ किया। फिर अरदास हुई। गुरु साहिब ने गढ़ी में बाकी सिंघों से कहा— "हमारे पास लड़ते हुए शहीद होने के अलावा और कोई चारा नहीं है। युद्ध में हमारे लहू की बही एक भी बूंद व्यर्थ नहीं जाएगी। जब तक धरती पर आसमान रहेगा, शत्रु से हमारा खून हिसाब मांगता रहेगा। गुरु साहिब ने सिंघों से कहा कि कल मैं जत्था लेकर युद्ध के मैदान में जाऊंगा। मैं भी शत्रु के साथ आमने-सामने दो हाथ करूंगा।"

गुरु साहिब के इस फैसले पर सिंघ सोचने लगे। उन्होंने गुरु साहिब से कहा— "इस विपदा के समय आपकी शहादत खालसा पंथ को घोर संकट में डाल देगी।" रात हो गई थी। गढ़ी में केवल आठ सिंघ और गुरु साहिब शेष रह गए थे। गुरु साहिब अपने फैसले पर डटे

हुए थे। पांच सिंघों ने गुरु साहिब से विनती की कि "हजूर! आप कहते थे कि मैं पंथ का हुक्म मानूंगा। अब खालसा पंथ के हुक्म को मानने का समय है।" पांच प्यारों में से भाई दया सिंघ जी पांच सिंघों का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने आप जी से कहा— "सच्चे पातशाह! खालसा पंथ का हुक्म है कि आप जी गढ़ी को छोड़ कर किसी सुरक्षित ठिकाने पर चले जाओ, क्योंकि आपने अभी और बहुत-से कार्य करने हैं। आपकी शहादत से पंथ के वे कार्य रुक जाएंगे।" गुरु साहिब ने पंथ का हुक्म मान लिया और कहा कि "मैं पंथ का हुक्म मान कर, गढ़ी छोड़ कर चला जाऊंगा, परंतु मैं छिप कर नहीं जाऊंगा। मैं दुश्मन-दलों को ललकार कर बाहर जाऊंगा।" पांच प्यारों ने यह भी फैसला किया कि गुरु साहिब के साथ तीन सिंघ— भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी गढ़ी से बाहर जाएंगे। खालसा पंथ का सबसे पहला गुरमता चमकौर साहिब की धरती पर (गढ़ी में ) हुआ था । इस गुरमते के माध्यम से गुरु साहिब को चमकौर साहिब की गढ़ी को छोड़ कर जाने के लिए कहा गया था। बहुत सारे सिंघ शहीद हो चुके थे। मुगल फौज को पक्का निश्चय था कि वे सूर्योदय होते ही गुरु साहिब को जिंदा पकड़ लेंगे, लेकिन यह उनका भ्रम निकला। युद्ध-कला में दांव-पेच के माहिर गुरु साहिब शत्रु फौज को भ्रम में डाल कर बाहर जाना चाहते थे। भाई संगत सिंघ जी का चेहरा गुरु साहिब के चेहरे के साथ मिलता था। गुरु साहिब ने अपनी कलगी उतार कर भाई संगत सिंघ जी के शीश पर सजा दी, जिससे दुश्मन फौज को लगे कि गुरु साहिब अभी गढ़ी के अंदर ही हैं ।

गुरु साहिब ने तीनों सिंघों को समझा दिया था कि उन्होंने रात के समय ध्रुव तारे की दिशा में माछीवाड़ा की तरफ जाना है। गुरु साहिब ने अपने बाहर जाने से पहले इन तीनों सिंघों— भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी तथा भाई मान सिंघ जी को गुप्त दरवाज़े से गढ़ी से बाहर भेज दिया।

गुरु साहिब रात के अंधेरे में गढ़ी की दीवार से छलांग लगाकर नीचे उतरे। मैदान में आकर ऊंचे टीले पर खड़े होकर ज़ोर से आवाज़ लगाई— "मैं जा रहा हूं। कोई है जो पकड़कर दिखाए?" गुरु साहिब ने जिस जगह पर खड़े होकर आवाज़ लगाई थी, वहां से दूसरी दिशा की तरफ निकल गए। रात का घना अंधेरा था । शत्रु फौज के सिपाही जिस तरफ से आवाज़

आई थी, उधर भागे। अंधेरे में शत्रु फौज के सिपाही आपस में ही टकराने लगे। भगदड़ मच गई। अंधेरे में उनकी आपस में ही मार-काट शुरू हो गई। गुरु साहिब दुश्मनों को भ्रम में डाल कर साफ बच कर निकल गए।

सूर्योदय होते ही मुगलों ने देखा कि मरे हुए सब आदमी उनके थे। गुरु साहिब जिस टीले पर खड़े होकर ताली बजा कर शत्रु फौज के घेरे में से निकले थे, वहां अब 'गुरुद्वारा ताड़ी (ताली) साहिब' सुशोभित है। यह गुरुद्वारा चमकौर साहिब से बाहर उत्तर-पश्चिम दिशा में है । गुरु साहिब का दुश्मन के दलों को भ्रम में डाल कर, ललकार कर माछीवाड़ा के जंगल में पहुंच जाना युद्ध-कला और निर्भयता का कमाल है। इतिहास का यह एक अद्वितीय अध्याय है । गुरु साहिब के तीन साथी सिंघों— भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी का उनको माछीवाड़ा के जंगल में आकर मिलना शूरवीरता की अनोखी गाथा है । चमकौर की गढ़ी में शेष बचे सिंघों का अगले दिन दुश्मन के दलों के साथ जूझ कर शहीद हो जाना, उनके काबू न आना, सिक्खी आस्था का शिखर है। जिस फौज का जरनैल युद्ध का घेरा तोड़ बच कर निकल जाए, वह फौज हमेशा जिंदा समझी जाती है। चमकौर साहिब के युद्ध में खालसे की जीत हुई थी ।

भाई संगत सिंघ जी शत्रु के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए। तुर्कों ने भाई संगत सिंघ जी का शीश काट लिया । पूरा एक दिन मुगल फौजदार एक दूसरे को बधाई देते रहे कि उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शहीद कर दिया है। सरहिंद के सूबे वज़ीर खान ने पूरे मामले की पड़ताल करवाई। किसी विश्वसनीय आदमी ने भाई संगत सिंघ जी के शीश को पहचान कर बताया कि यह शीश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नहीं है। यह कोई उनका सिक्ख सिपाही है। मुगलों को असली बात का पता कुछ दिनों के बाद चला कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपनी पोशाक अपने एक सिंघ, जिसकी शक्ल उनके साथ मिलती थी, को पहना कर खुद गढ़ी से कहीं दूर चले गए थे । गुरु साहिब के चमकौर की गढ़ी में से बच कर बाहर निकल जाने पर मुगल फौज शर्मसार और निराश हो गई ।

# शहीद भाई संगत सिंघ जी

*–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर' **

सिक्ख धर्म के पैरोकारों को यह सम्मान और गौरव प्राप्त है कि सिक्ख गुरुओं ने सिक्खी को विश्व में एक अलग, विलक्षण, विशेष और उत्कृष्ट पहचान दी तथा सभी सिक्खों को अन्याय, अत्याचार, अधर्म, असमानता, भेदभाव जात-पांत की कुव्यवस्था के विरुद्ध जूझने, लड़ने, कुर्बान होने की प्रेरणा व शक्ति दी। सिक्खों को शूरवीरों, बहादुरों, जांबाज़ों, न्यायप्रेमियों, धर्मरक्षकों, शहीदों की कौम कहा जाता है। इस कौम में अनेक शहीद हुए हैं। इन्हीं में से एक महान शहीद 'भाई संगत सिंघ' जी हैं।

भाई संगत सिंघ जी का जन्म २४ अप्रैल, १६६७ ई. को भाई रणिया जी तथा माता अमरो जी के घर पटना साहिब (बिहार) में हुआ। इनका बचपन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ ही हंसते-खेलते हुए गुजरा था। जैसे भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक देव जी के बाल-सखा थे, ऐसे ही भाई संगत सिंघ जी भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाल-सखा थे। इन्होंने गुरु जी के साथ ही शस्त्र-विद्या, निशानेबाज़ी, घुड़सवारी में प्रवीणता हासिल की। इनकी शक्ल-सूरत दशमेश पिता जी के साथ काफी मिलती-जुलती थी। इसी कारण युद्ध में दुश्मन सेना गुरु जी के भ्रम में भाई संगत सिंघ जी पर वार कर देती थी। सन् १६९९ ई. की बैसाखी वाले दिन गुरु जी से अमृत-पान कर 'सिंघ' सज गए थे।

भाई संगत सिंघ जी ने श्री चमकौर साहिब के युद्ध से पहले भंगाणी युद्ध, अगंमपुरा के युद्ध में तथा सरसा नदी के किनारे हुए युद्ध में अपनी शूरवीरता, बहादुरी व अदम्य साहस के साथ शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए थे। ये साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी के साथ मिलकर एक ब्राह्मण औरत को ज़ालिम हाकिम से छुड़वाकर लाए थे। यह गुरु जी की संगति का ही असर था कि भाई संगत सिंघ जी बहुत बहादुर, निडर, दयालु और परोपकारी थे।

ऐतिहासिक तथ्यों के मुताबिक भाई संगत सिंघ जी के पूर्वज कपड़ा तैयार कर इसका व्यापार किया करते थे। इस व्यवसाय से ये अपना जीवन-निर्वाह किया करते थे। इनके पूर्वज श्री गुरु नानक देव जी के अति श्रद्धालु थे। इनके पूर्वजों में भाई जैला जी श्री गुरु रामदास जी के निकटवर्ती सेवक थे।

गुरुआई पर आसीन होने के बाद नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने श्री अनंदपुर साहिब रहना शुरू कर दिया था। उसके बाद वे सिक्खी के प्रचार हेतु पटना साहिब में चले आए। उनके साथ भाई संगत सिंघ जी के माता-पिता भी चले आए थे। इसी स्थान पर भाई संगत सिंघ जी का जन्म हुआ। ये श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से लगभग चार माह छोटे थे।

पहाड़ी क्षेत्र के गद्दार व मक्कार राजाओं और जालिम मुगलों की भारी फौज के साथ युद्ध के दौरान

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५७९९०*

जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ना पड़ा, तब गुरु जी के संग ये भी चमकौर साहिब आ गए। पीछा करती हुई शत्रु सेना यहां तक पहुंच गई। इस स्थान पर जांबाज़ सिक्ख शूरवीरों ने अल्प संख्या में होते हुए भी शत्रु सेना को घमासान युद्ध में नाकों चने चबवा दिए। इस युद्ध में साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी सहित कई सिंघ लड़ते हुए शहादत प्राप्त कर गए। विपरीत परिस्थितियों के दौरान पांच सिंघों ने एक 'गुरमता' (पंथक निर्णय) पारित कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से चमकौर की गढ़ी से तुरंत बाहर निकलने का आदेश दिया। दशमेश पिता जी ने पांच सिंघों का आदेश स्वीकार करते हुए अपने वस्त्र, अस्त्र, शस्त्र भाई संगत सिंघ जी को धारण करवा दिए और अपनी कलगी भी उनके सिर पर अपने हाथों से सजाकर चमकौर की गढ़ी में से बाहर चले गए। गुरु जी ने 'आपे गुरु चेला' का सिद्धांत पुन: दृढ़ करवा दिया।

भाई संगत सिंघ जी के सिर पर सजी कलगी देखकर शत्रु सेना ने उन्हें ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी समझ लिया। सिक्ख फौज का इस स्थान पर दुश्मन की फौज के साथ भारी मुकाबला हुआ और इस मुकाबले में भाई संगत सिंघ जी शूरवीरता के साथ लड़ते हुए २२ दिसंबर, सन् १७०४ ई. को शहादत प्राप्त कर गए। गुरु एवं गुरु-घर के प्रति अपनी निष्ठा, श्रद्धा और समर्पण का एक अध्याय ये अपने लहू से लिख गए।

क्रूर एवं ज़ालिम मुगल सेना ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के भ्रम में भाई संगत सिंघ जी का शीश सरहिंद रियासत के सूबे वजीर खान के सामने पेश किया। दशमेश पिता जी से परिचित सूबे की पत्नी जैना बेगम और मौलवी नूरुद्दीन ने भाई संगत सिंघ जी के शीश को पहचान लिया। आगबबूला हुए सूबा सरहिंद के कहने पर उनके शीश को पुन: नेजे पर टांगकर पूरे सरहिंद शहर में घुमाया गया। फिर एक चौराहे पर लटकाकर इर्द-गिर्द सिपाहियों का एक घेरा डलवा दिया गया। ऐसा अमानवीय, क्रूरतापूर्ण, असहनीय कृत्य देख भाई बघौर सिंघ जी और भाई मग्घर सिंघ जी का खून खौल उठा। उन्होंने इस शीश का मर्यादापूर्वक दाह-संस्कार करने की ठान ली। रात के अंधेरे में दोनों सिंघों ने अति साहस एवं वीरता के साथ घेरा डाले सभी सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। फिर भाई संगत सिंघ जी के शीश को ससम्मान अपने साथ ले जाकर सरहिंद में ही उसका दाह-संस्कार कर दिया। यह स्थल अब श्री फतहिगढ़ साहिब से बस्सी पठानां कसबे को जाते रास्ते पर रेल फाटक के निकट स्थित है। यहां पर भाई संगत सिंघ जी का 'स्थान' बना हुआ है। भाई संगत सिंघ जी के नाम पर एक गुरुद्वारा श्री अनंदपुर साहिब में सुशोभित है।

हम सबको अपने गुरुओं, भक्तों, संतों, रहबरों, शहीदों की कुर्बानियों, कल्याणकारी एवं परोपकारी कार्यों से प्रेरणा व आगवानी लेते हुए सिक्खी की चढ़दी कला के लिए और लोक-कल्याण के लिए सदैव तत्पर तथा समर्पित रहना चाहिए, एकजुट रहना चाहिए।

# चमकौर की जंग के शहीद
# भाई मदन सिंघ व भाई काठा सिंघ

–डॉ. गुरप्रीत सिंघ*

श्री चमकौर साहिब का सिक्ख याद में वो महान स्थान है, जो सिक्ख पंथ को हमेशा संघर्ष के लिए तत्पर करता रहेगा। इस स्थान पर लाखों की संख्या वाली फ़ौज के साथ लड़ने वाले चालीस सिंघों ने सिक्ख पंथ को यह सिखाया कि जंग बहुसंख्या के आधार पर नहीं, बल्कि बलवान रूह से लड़ी जाती है। इसी प्रकार के ही गुरु के प्यार में रंगे दो सिंघ— भाई मदन सिंघ व भाई काठा सिंघ श्री चमकौर साहिब की जंग में शहीद हुए हैं।

सिक्ख इतिहास में इन दोनों के बारे में नाममात्र जानकारी मिलती है। ये दोनों सिंघ गाँव भगड़ाना के निवासी थे। भगड़ाना गाँव राजपुरा से पश्चिम दिशा में १८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब मालवा-दौरे के दौरान इस नगर में रुके थे। इस नगर से बाहर बरोटे का एक पेड़ था, जिसके नीचे श्री गुरु तेग बहादर साहिब आकर विराजमान हुए थे। यहीं पर ही अमरू बहरा नामक एक सिक्ख ने गुरु जी की जलपान की सेवा की थी। भगड़ाना गाँव में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के एक अन्य सिक्ख भाई दिआला जी रहते थे। भाई दिआला जी इससे पूर्व चक्क नानकी (श्री अनंदपुर साहिब) में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन कर आए थे।[१]. भाई दिआला जी भगड़ाना गाँव में कपड़ा बुनने का व्यवसाय किया करते थे। इनके घर दो पुत्रों ने जन्म लिया। बड़े पुत्र का नाम 'मदन' रखा गया और छोटे का नाम 'काठा' रखा गया।[२]. १६९९ ई. की बैसाखी वाले दिन ये दोनों भाई अमृत छक कर 'भाई मदन सिंघ' और 'भाई काठा सिंघ' बन गए। सिक्ख इतिहास के स्रोतों में सर्वप्रथम भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ का ज़िक्र भाई कुइर सिंघ ने किया है। वे इन दोनों सिंघों के नाम लिखने के बिना ही इन्हें 'रंघरेटे सिंघ' लिखते हैं :

*दो रंघरेटे थे तहि जाना।*
*दो दिज सिंघ महा प्रधाना॥*[३].

ये दोनों भाई श्री गुरु गोबिंद जी के पास स्थायी तौर पर आ गए थे। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, भाई मदन सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अश्व दल की सेवा किया करते थे।[४]. दसम गुरु जी जब रवालसर की तरफ गए तो एक राजपूत राजा गुरु जी के पास आने लगा। इस राजा के मन में फरेब था। वह एक दिन गुरु जी से कहने लगा कि ''गुरु जी! रवालसर का मेला आ रहा है। आप भी चलें! वहाँ सभी राजा आ रहे हैं। वे आपके

*रिस्र्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिस्र्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, जिला श्री अमृतसर साहिब, फोन : ८७२५०-१५१६३

सिक्ख बनेंगे।" निकट खड़े भाई मदन सिंघ उच्च स्वर में बोल उठे :

*करेगा सो भरेगा। गुरु का की करेगा।*
*सेवक ते काज सरेगा। दुसमन दूत मरेगा।*

सिक्खों ने भाई मदन सिंघ के उपरोक्त वाक्यों का मतलब गुरु जी से पूछा तो गुरु जी कहने लगे कि भाई मदन सिंघ को राजाओं के फरेब का ज्ञान हो गया है। भाई मदन सिंघ ने हमारे घोड़े की बारह महीने सेवा की है, इसलिए इसे अगम-निगम का ज्ञान हो चुका है।[५] इतिहास में ज़िक्र मिलता है कि एक बार गुरु जी सिंघों सहित घोड़े पर सवार होकर जा रहे थे तो गुरु जी का घोड़ा रुक गया और आगे न बढ़ा। गुरु जी ने भाई मदन सिंघ से कहा कि "घोड़ा क्यों रुका है? आगे जाकर देखो!" जब भाई मदन सिंघ ने आगे जाकर देखा तो पता चला कि आगे तम्बाकू के पौधे हैं। गुरु जी ने सिंघों से कहा कि "जिस प्रकार तम्बाकू से हमारे घोड़े ने सावधानता दिखाई है इसी प्रकार सिंघों ने भी तम्बाकू से सावधानता रखनी है।"[६] इस घोड़े की सेवा-संभाल भाई मदन सिंघ किया करते थे।

भाई मदन सिंघ का नाम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवियों में भी शामिल है। गुरु-दरबार की संगत से भाई मदन सिंघ काव्य-रचना भी किया करते थे। परन्तु, इनकी काव्य-रचना का कोई नमूना प्राप्त नहीं हो सका। समय की अंधेरगर्दी में इनकी काव्य-रचनाएं कहीं लुप्त हो गई प्रतीत होती हैं।[७] श्री अनंदपुर साहिब को जब आख़िरी वक्त मुगलों ने घेरा डाला तो उस वक्त भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ गुरु जी के साथ थे। गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा तो सबसे पीछे साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी का जत्था था और उस जत्थे में भाई मदन सिंघ शामिल थे। जब यह जत्था मलकपुर रंघड़ां में से गुज़रा तो घायलावस्था में भाई बचित्तर सिंघ को कोटला निहंग खान पहुँचाया गया। तब भाई मदन सिंघ भी साथ थे।[८] गुरु जी चालीस सिंघों सहित जब श्री चमकौर साहिब में पहुँचे तो 'गुरु कीआं साखियां' के अनुसार, "गढ़ी के चारों तरफ दीवारों के निकट आठ-आठ सिंघों को लगाया गया। भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ को दरवाज़े पर खड़ा किया गया।"[९] 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के अनुसार भी भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ को गढ़ी के दरवाज़े पर रक्षक बनाकर तैनात किया गया। इन दोनों सिंघों ने बंदूकों द्वारा गढ़ी के दरवाज़े की तरफ बढ़ती दुश्मन सेना को रोके रखा :

*काठा सिंघ एक, औ मदन सिंघ दोनों हूं को,*
*दीनो पौर गाढे रहो कीजै रिपु हेरि हान।*
*गुलका बारूद नहिं डारीए तुफंग बीच,*
*तोड़ा देहु डांभि डांभि, छूटिहै न संक ठानि।।*[१०]

चमकौर की गढ़ी को सीढ़ी लगा कर ऊपर चढ़ने का यत्न करता हुआ नाहर ख़ान मलेरिया गुरु जी के तीर से मारा गया। इस समय पीछे हट रही तुर्क फ़ौज को देख कर एक पठान दरवाज़े की तरफ बढ़ा। उसने गढ़ी के दरवाज़े पर कई हमले किये। इन हमलों के दौरान ही भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ शहीद हो गए। 'गुरु कीआं

साखियां' के अनुसार, "पीछे हट रही तुर्क फ़ौज को देख कर एक पठान दरवाज़े की तरफ़ आया। उसने जोश में आकर कई हमले किए। कोई कसर बाकी न छोड़ी। आखिर दरवाज़े पर लड़ रहे दोनों सिंघों को शहीद कर खुद भी मारा गया। सतिगुरु ने भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ के शहीद हो जाने के बाद भाई सेर सिंघ और भाई नाहर सिंघ को दरवाज़े पर तैनात किया।[११]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'ज़फरनामा' के शेयर ३१, ३२, ३३ में चमकौर की गढ़ी के दरवाज़े पर हुए हमलों में भाई मदन सिंघ व भाई काठा सिंघ की शहादत का वर्णन किया है। 'ज़फ़रनामा' के अनुसार, "एक अन्य पठान जंग करने के लिए मैदान में आया। वह बाढ़ के पानी की तरह और तीर व बंदूक की गोली की तरह आया। (३१) उस पठान ने बहुत-से हमले बड़ी बहादुरी में किये। कुछ हमले उसने बड़ी अक्कमंदी के साथ किये और कुछ पागलपन में किये। (३२) उस पठान ने बहुत हमले किए और ज़ख़्म भी खाए। उसने हमारे दो आदमियों (भाई मदन सिंघ व भाई काठा सिंघ) को मार दिया और खुद भी अपनी जान दे गया अर्थात् मर गया।[१२] (३३)

भाई मदन सिंघ व भाई काठा सिंघ चमकौर की गढ़ी में शहादत प्राप्त करने वाले पहले सिक्ख बने। सिक्ख पंथ युगों-युगों तक श्री चमकौर साहिब की धरती पर जाकर भाई मदन सिंघ और भाई काठा सिंघ की शहादत को नत्मस्तक होता रहेगा।

**संदर्भ-सूची :**


१. डॉ. फौजा सिंघ, गुरु तेग बहादर : यात्रा-स्थान, परंपरावां ते याद-चिह्न, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९७६, पृष्ठ ३८.

२. डॉ. रत्न सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्व कोश, ग्रेसियस बुक्स, पटियाला, २०१४, पृष्ठ १५७६.

३. स. कुइर सिंघ, गुरबिलास पातशाही १०, (संपा.) स. शमशेर सिंघ अशोक, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९९, पृष्ठ १७७.

४. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरशबद रत्नाकर महान कोश, नेशनल बुक शाप, दिल्ली, २००५, पृष्ठ ९४६.

५. प्राचीन सौ साखी, (संपा.) प्रो. प्यारा सिंघ पद्म, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २००१, पृष्ठ ९७.

६. उपरोक्त, पृष्ठ १७६.

७. प्रो. प्यारा सिंघ पद्म, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दे दरबारी रत्न, कलम मंदिर, लोअर मॉल, पटियाला, १९९४, पृष्ठ २२६.

८. स. सरूप सिंघ, गुरु कीआं साखियां, (संपा.) प्रो. प्यारा सिंघ पद्म, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २००८, पृष्ठ १५४.

९. उपरोक्त, पृष्ठ १५६.

१०. कवि संतोख सिंघ, श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, (संपा.) भाई वीर सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, २०११, जिल्द चौदहवीं, पृष्ठ ५८८०-८१.

११. स्वरूप सिंघ, गुरु कीआं साखियां, (संपा). प्रो. प्यारा सिंघ पद्म, पृष्ठ १५६.

१२. ज़फरनामा पातशाही १० सटीक, टीकाकार ज्ञानी नरैण सिंघ, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, बाज़ार माई सेवां श्री अमृतसर साहिब, २००६, पृष्ठ ५९०.

# सुलतानपुर लोधी : पूर्व काल और वर्तमान में

–ज्ञानी कौर सिंघ कोठा गुरु*

सुलतानपुर लोधी की धरती महान, पवित्र और ऐतिहासिक है। चाहे इसकी प्राचीनता भी गौरवपूर्ण है, परन्तु श्री गुरु नानक देव जी के पवित्र चरणों का स्पर्श प्राप्त कर यह धरती विश्व-प्रसिद्ध हो गई। सतलुज और ब्यास नदियों के मध्य दो नदियाँ और बह रही हैं— श्वेत वेईं और काली वेईं। वेईं नदी, जिसके तट पर सुलतानपुर लोधी स्थित है, का पूर्वकालीन इतिहास गौरवमयी है।

पूर्व काल में श्वेत वेईं और काली वेईं के जल का बहाव विशाल, रूप में ब्यास एवं सतलुज नदी की भाँति ही था। बुद्ध साहित्य में इस स्थान पर 'तमसा वन' का वर्णन मिलता है।

सुलतानपुर नगर नासर-उद-दीन मुहम्मद शाह के समय इस नाम से प्रसिद्ध हो गया। दिल्ली के सुलतान इब्राहिम लोधी के शासन-काल में लाहौर का सूबेदार दौलत खान लोधी यहाँ का मुख्य शासक था। उस समय सुलतानपुर विद्या, व्यापार तथा राजनीति का केंद्र बना। नदियों की रमणीकता के कारण दौलत खान लोधी लाहौर की बजाय सुलतानपुर लोधी में ही निवास करता रहा।

श्री गुरु नानक देव जी इसी दौलत खान लोधी के मोदीखाने (खाद्य स्टोर) के मोदी (मुख्य अधिकारी, स्टोरकीपर) थे। श्री गुरु नानक देव जी का सुलतानपुर लोधी में निवास होने के कारण सुलतानपुर लोधी साधारण शहर की बजाय पवित्र तीर्थ और प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर बन गया। भाई गुरदास जी ने सुलतानपुर को 'सुलतानपुर भगत भंडारा' नाम-बाणी, भक्ति का स्रोत कहा है। गुरु जी के नित्य-कर्म, मर्यादा के अनुसार यहां पर हर समय सत्संग, ज्ञान-गोष्ठियां होने लगी, गुरबाणी का कीर्तन होने लगा। सुलतानपुर लोधी भक्ति का केंद्र बन गया।

**गुरुद्वारा बेर साहिब :** गुरुद्वारा बेर साहिब वेईं नदी के तट पर सुस्थित मुख्य स्थान है। यहीं पर नदी के घाट पर गुरु जी अमृत बेला में स्नान कर नाम-चिंतन-सुमिरन किया करते थे। इतिहास के अनुसार गुरु जी वेईं नदी में रोज़ाना स्नान किया करते थे। एक दिन गुरु जी ने बेरी की दातुन कर वेईं नदी के तट पर गाड़ दी, जो विशाल वृक्ष का रूप धारण कर गई। भाई संतोख सिंघ 'नानक प्रकाश' में लिखते हैं :

*आपन ते चल नीर के तीर पै,*

*गाँव व डाकख़ाना : कोठा गुरु, तहसील फूल, ज़िला बठिंडा—१५१२०६, फोन : ९९१५७-६३४८७

*दंतन धावन आनि करी ॥*
*गाड दई धर, होति भयो तरु है,*
*अबलो बर सो बदरी ॥ १५ ॥*

*(पूरबार्ध, अध्याय २८)*

यह बेरी अत्यंत सुंदर, हरी-भरी, कोमल पत्तों वाली गुरुद्वारा बेर साहिब के पीछे वेईं नदी के किनारे सुशोभित है। संगत दर्शन कर आनंद प्राप्त करती है। इस बेरी के नाम पर ही गुरुद्वारा साहिब का नाम है।

जन्म साखियों के अनुसार एक दिन इसी स्थान पर गुरु जी का निरंकार (प्रभु) के साथ मिलाप हुआ था। क्या विचार हुई, यह रहस्य की बात है, क्योंकि *"करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥"* यह केवल गुरु जी और निरंकार ही जानता है। जन्म-साखियों के अनुसार गुरु जी ने निरंकार के दर पर जाकर निरंकार की उपमा में यह शब्द उच्चारण किया :

*सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥*

*(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६)*

भाई गुरदास जी के कथनानुसार, "बाबा पैधा सच खंडि नउ निधि नामु गरीबी पाई।" निरंकार से नउ-निधि नाम-सुमिरन, बाणी, ग़रीबी, (नम्रता प्राप्त) की और 'संत घाट' नामक स्थान पर प्रकट हुए।

**गुरुद्वारा संत घाट साहिब :** वेईं नदी में स्नान कर सतिगुरु जी तीन दिनों के बाद इस स्थान पर प्रकट हुए थे। 'संत घाट' मूल-मंत्र का स्रोत है, गुरबाणी का आधार है। 'संत घाट' ही 'सचखंड' का द्वार है। यह बात स्पष्ट है और याद रखने योग्य है कि वेईं के जिस घाट पर गुरु जी प्रकट हुए थे, उस गुरुद्वारा साहिब का नाम 'संत घाट' प्रसिद्ध है। यह स्थान गुरुद्वारा बेर साहिब से लगभग दो किलोमीटर दूर उत्तर-दक्षिण दिशा में स्थित है।

**गुरुद्वारा हट्ट साहिब :** नवाब दौलत खान लोधी के मोदीखाने वाले स्थान पर बहुत ही सुंदर गुरुद्वारा साहिब की इमारत तैयार की गई है। यहाँ एक सरोवर भी है। इस स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी ने नवाब दौलत खान लोधी के मोदीखाने में मोदी के रूप में नौकरी की थी। उस समय फकीरों और निर्धन लोगों की भीड़ गुरु जी से अनाज लेने के लिए जुटी रहती। अनाज तौलते समय गुरु जी 'तेरा-तेरा' का गुणगान करते रहते। ग़रीब, फ़कीर और सौदा क्रय करने वाले सभी लोग खुश होकर जाते। परंतु, विरोधियों-चुगलख़ोरों को गुरु जी की यह लोकप्रियता हज़म न हुई और वे नवाब के पास शिकायतें करने लगे कि 'नानक' मोदीख़ाना लुटाए जा रहा है। गुरु जी की जवाब-तलबी हुई और मोदीखाने का लेखा-जोखा हुआ। जब हिसाब किया गया तो रसद घटने की बजाय अधिक निकली। यह देख कर नवाब बहुत प्रभावित हुआ और उसके मन में गुरु जी के प्रति सम्मान और अधिक बढ़ गया।

जिन पत्थर के बाट से सतिगुरु जी अनाज तौला करते थे, उनकी संख्या भी तेरह है। ये पत्थर के बाट गुरुद्वारा हट्ट साहिब में शीशे के बने एक बक्से में संभाल कर रखे हुए हैं, जिनके दर्शन कर संगत निहाल होती है। यात्रियों की रिहायश के लिए कमरे बने हुए हैं और लंगर भी चलता है।

**गुरुद्वारा अंतरयामता साहिब :** यह पावन स्थान उस मस्जिद वाले स्थान की जानकारी देता है जहाँ नवाब दौलत खान ने गुरु जी को नमाज़ पढ़ने के लिए बुलाया था। दिव्य आत्मा श्री गुरु नानक देव जी ने जांच लिया था कि नवाब और काज़ी बाहरी तौर पर नमाज़ पढ़ रहे हैं, जबकि भीतर उनका मन सांसारिक उलझनों में खोया हुआ है। यह जान कर गुरु जी एक तरफ़ खड़े हो गए। जब नवाब ने गुरु जी से पूछा कि आप नमाज़ पढ़ने में शामिल क्यों नहीं हुए तो सतिगुरु जी ने उनको बताया कि नवाब और काज़ी दोनों नमाज़ पढ़ते समय वास्तव में क्या सोच रहे थे। वास्तविकता सुन कर दोनों गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े। 'अंतरयामता' द्वारा वास्तविकता जान लेने के कारण इस स्थान का नाम 'गुरुद्वारा अंतरयामता साहिब' प्रचलित हो गया।

**गुरुद्वारा गुरु का बाग़ :** सुलतानपुर लोधी में श्री गुरु नानक देव जी ने जिस जगह निवास किया, उस स्थान पर यह गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। यहाँ पर गुरु जी के दोनों पुत्रों— बाबा श्रीचंद जी और बाबा लखमी दास जी का जन्म हुआ। इस गुरुद्वारा साहिब में एक कुआँ है, जिसमें रहंट लगा हुआ है, जो आकार में तंग है और अब ढका हुआ है। यहाँ फव्वारे भी लगे हुए हैं। गुरुद्वारा साहिब की इमारत दो-मंजिला है। दीवारों पर टायलें लगी हुई हैं। मुख्य प्रवेश द्वार पर शीशे के टुकड़े लगे हुए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश, हाल में बने आयताकार चबूतरे पर किया गया है।

**गुरुद्वारा कोठड़ी साहिब :** गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के निकट ही गली में गुरुद्वारा कोठड़ी साहिब शोभित है। गुरुद्वारा साहिब धरातल से काफ़ी ऊँचा है। सीढ़ियों के रास्ते से चढ़ कर, आगे छोटे-से आंगन में से गुज़र कर एक कमरे में प्रवेश किया जाता है। इस कमरे में ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश है। इस कमरे के पीछे एक छोटी-सी कोठरी है। बताते हैं कि यह कोठरी नवाब दौलत खान के मुंशी जादो राय जैरथ के मकान की है। 'तवारीख गुरु खालसा' के अनुसार जब गुरु जी की शिकायत हुई थी कि गुरु जी मोदीख़ाना लुटा रहे हैं तो नवाब के सिपाहियों ने गुरु जी को इस कोठरी में बंद कर दिया था। साथ के कमरे में दो दिन जाँच होती रही। हिसाब के बाद गुरु जी का बकाया नवाब की तरफ निकला। इस तरह दो दिन गुरु जी इस कोठरी में बंद रहे।

**गुरुद्वारा बेबे नानकी जी :** सुलतानपुर लोधी में श्री गुरु नानक देव जी की बड़ी बहन बेबे नानकी

जी ने जिस घर में अपना जीवन व्यतीत किया और जिस घर को सतिगुरु नानक देव जी का चरण-स्पर्श प्राप्त है, उस मकान को 'बेबे नानकी जी की धर्मशाला' नाम से जाना जाता है। इसका एक मुख्य दरवाज़ा है और तीन छोटे दरवाज़े हैं। सन् १९७० ई. में इस स्थान का नवनिर्माण किया गया और गुरुद्वारा साहिब निर्मित किया गया। यह तीन-मंजिला इमारत मुहल्ला छींबियां में स्थित है। यह गुरुद्वारा 'बेबे नानकी स्त्री सतिसंग चेरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा बरमिंघम (इंग्लैंड) निवासी बीबी बलवंत कौर आदि के माध्यम से तैयार हुआ है। गुरुद्वारा बेबे नानकी जी में एक हाल है, जिसमें सफेद संगमरमर की बनी पालकी पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया गया है।

**गुरुद्वारा सेहरा साहिब :** गुरुद्वारा सेहरा साहिब वो स्थान है जहाँ श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा सन् १६०४ ई. में अपने साहिबज़ादे श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के विवाह के समय गाँव डल्ला की ओर बारात ले जाते वक्त यहाँ पर रात्रि-विश्राम किया था। परंपरा के अनुसार दूसरे दिन गांव डल्ला को जाते समय यहाँ पर श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब को सेहरा सजाया गया था। ईंटों की चारदीवारी के अहाते में बने गुरुद्वारा साहिब के अंदर अष्टभुज गुंबद वाला कमरा है, जिसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया हुआ है।

सभी गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब के अधीन है। सुलतानपुर लोधी की धरती महान है, सम्माननीय है। इस धरती से सिक्खी का आरंभ हुआ है। सुलतानपुर लोधी का कण-कण पवित्र है। सुलतानपुर लोधी की चारों दिशायों को सतिगुरु जी के चरणों का स्पर्श प्राप्त है। सुलतानपुर लोधी की धरती को कोटि-कोटि अभिनंदन है।

सुलतानपुर लोधी जलंधर से २६ मील (४२ किलोमीटर) दूर दक्षिण-पश्चिम दिशा में है और कपूरथला से २७ किलोमीटर दूर दक्षिण-पूरब दिशा में है। मुग़ल-काल में सुलतानपुर लोधी उस मार्ग पर स्थित था जो लाहौर से दिल्ली को जाता था।

**सहायक सामग्री :**

१. सुलतानपुर लोधी सर्वे पुस्तक, भाषा विभाग पंजाब।
२. सिक्ख धर्म विश्व कोश, प्रो. हरबंस सिंघ, जिल्द प्रथम, २००८, मुख्य संपादक डॉ. जोध सिंघ, पृष्ठ ५५६-५५७.
३. पंजाबी लोकधारा विश्व कोश, बनजारा बेदी, जिल्द तृतीय, पृष्ठ ४१४-४१५
४. निर्मल पंथ बोध, १९९८, ज्ञानी बलवंत सिंघ कोठा गुरु, पृष्ठ २-३

# श्री हरिमंदर साहिब की रक्षार्थ प्राण न्यौछावर करने वाले शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ जी

–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब सिक्खों का केंद्रीय आध्यात्मिक स्थल है, इसलिए यह सिक्खों की श्रद्धा, आन-बान-शान और स्वाभिमान का सबसे बड़ा प्रतीक रहा है। १८वीं शताब्दी में सिक्खों का सारा संघर्ष शोषित-पीड़ित मानवता की रक्षा के लिए था। मानवता के शत्रुओं को लगता था कि सिक्ख अपनी सारी शक्ति 'श्री हरिमंदर साहिब' और 'अमृत सरोवर' से प्राप्त करते हैं। वे समझते थे कि 'अमृत सरोवर' का जल छक कर ही सिक्ख इतने बहादुर, दिलेर, दृढ़ निश्चय वाले बन जाते हैं। मानवता के शत्रुओं के मन में यह ख्याल घर कर गया कि यदि इस स्थान को ही नष्ट कर दिया जाये तो सिक्खों की मानसिक शक्ति खत्म हो जायेगी और उन्हें आसानी से समाप्त किया जा सकेगा। इस उद्देश्य को सामने रख कर तत्कालीन आक्रमणकारी मुगलों, तुर्कों, अफगानों आदि ने कई बार श्री हरिमंदर साहिब एवं अमृत सरोवर को अपवित्र करने और नष्ट करने की कोशिशें कीं। परंतु, हर बार गुरु के लाडले सिंघों ने अपने गौरव के प्रतीक इस पवित्र स्थान को पुनः जीता और सजा-संवार कर पुनः निर्मित कर लिया।

सबसे पहले लाहौर के सूबेदार जकरिया खान ने सन् १७३३ की दीवाली के अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब में एकत्र होने वाले सिक्खों को एक साथ घेर कर खत्म कर देने की योजना बनाई। भाई मनी सिंघ जी की बुद्धिमता के कारण जकरिया खान का यह षड्यंत्र बुरी तरह से विफल हो गया। फलस्वरूप में भाई मनी सिंघ जी के शरीर का बंद-बंद काट कर उन्हें शहीद कर दिया गया।

इसके बाद सन् १७४५ ई. में जंडियाला शहर के फौजदार मस्से रंघड़ ने श्री हरिमंदर साहिब में जाकर पलंग बिछाया, शराब पी और नर्तकियां नचा कर इस पवित्र स्थान की घोर बेअदबी की।

तब भाई सुक्खा सिंघ और भाई महिताब सिंघ ने बीकानेर से आकर सरेआम मस्से का सिर काटा और बरछे पर टांग कर वापस ले गये। इस तरह दुष्ट मस्से रंघड़ को उसकी करनी का फल मिला।

सन् १७५२ ई. में लाहौर के दीवान लखपत राय ने श्री हरिमंदर साहिब ऊपर कब्जा कर अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। दल खालसा ने शीघ्र ही 'अमृतसर' शहर को पुनः प्राप्त कर अमृत सरोवर की कार सेवा करवा ली।

१७५२-५३ ई. में ही मीर मन्नू ने अमृत सरोवर

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना—१४११०१ फोन : ६२३९६-०१६४१

को मिट्टी से भरवा दिया, परंतु सिक्खों ने दीवाली आते-आते फिर से सरोवर की कार सेवा कर ली और उसे फिर से स्वच्छ कर लिया।

इसी तरह सन् १७५७ ई. में अहमद शाह अब्दाली का भारत में से लूटा हुआ माल सिंघों द्वारा छीन लेने पर अब्दाली का सिपहसालार जहान खान फौज लेकर श्री अमृतसर साहिब पर आ हमलावर हुआ। श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा करते हुए बाबा दीप सिंघ जी शहीद हो गये। जहान खान ने शहर को जीत कर अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। सिक्ख भी कहां चैन से बैठने वाले थे! गुरु के लाडलों ने उसी वर्ष श्री अमृतसर साहिब को फिर से प्राप्त कर सरोवर की कार सेवा कर ली।

इस प्रकार श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले सिक्खों की फेहरिस्त बहुल लम्बी है। इस शृंखला में एक नाम शहीद बाबा गुरबख्श सिंघ जी का भी है। अहमद शाह अब्दाली के सन् १७६४ ई. में हुए हमले के दौरान बाबा गुरबख्श सिंघ जी ने अपने मात्र तीस साथियों के साथ अब्दाली की छत्तीस हजार फौज का मुकाबला किया और अनगिनत वैरियों को मौत के घाट उतारते हुए अपने साथियों के साथ शहीदी प्राप्त की।

**बाबा जी का जन्म एवं जीवन :** बाबा गुरबख्श सिंघ जी श्री अमृतसर साहिब जिले के खेमकरन क्षेत्र के गांव 'लील' के रहने वाले थे। आपका जन्म संभवत: १७०५-१० ई. के आस-पास यहीं पर हुआ था। आपने युवा होकर भाई मनी सिंघ जी से अमृत छका और पूर्ण 'सिंघ' सज गये। आप पक्के रहितवान और सूरमा थे। पहर भर रात शेष रहते उठते, गुरबाणी का पाठ करते और धैर्यपूर्वक सिक्खी के सिद्धांतों का पालन करते। बाबा जी स्वच्छ सफेद रंग का 'बाणा' (चोगा एवं कछहिरा) धारण किया करते थे। सिक्ख आपको सम्मानपूर्वक 'निहंग जी' कहकर पुकारा करते थे। आप जहां कहीं भी युद्ध होने की ख़बर सुनते, नगाड़ा बजाते हुए वहां पहुंच जाते। बाद में आपने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के रूप में भी पंथ की सेवा की।

**अब्दाली का हमला :** नवंबर-दिसंबर सन् १७६४ ई. में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर सातवां हमला किया। इस समय ज्यादातर सिक्ख जत्थेदार पंजाब से बाहर अलग-अलग मुहिमों पर गये हुए थे। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया दिल्ली में थे। सरदार चढ़त सिंघ सिआलकोट में थे। जब उन्हें अब्दाली के लाहौर पहुंचने की ख़बर मिली तो उन्होंने तुरंत पहुंच कर अब्दाली के खेमों पर जबरदस्त हमला बोल दिया। इस अचानक हमले ने अब्दाली के लश्कर को भारी नुकसान पहुंचाया। एक सफल हमले के बाद सरदार चढ़त सिंघ अगले हमले की तैयारी करने के लिए अपने जत्थे के साथ जंगलों में चले गये।

**अब्दाली का श्री अमृतसर साहिब पर आक्रमण :** इस अचानक हमले से भन्नाया अब्दाली श्री अमृतसर साहिब की ओर बढ़ा। एक

दिसंबर सन् १७६४ के दिन, उसने आते ही श्री हरिमंदर साहिब को घेर लिया। इस समय श्री हरिमंदर साहिब में बाबा गुरबख्श सिंघ जी सहित मात्र तीस सिक्ख थे। हमले की ख़बर सुनते ही बाबा जी ने श्री हरिमंदर साहिब की सुरक्षा की तैयारी शुरू कर दी। सभी सिंघों ने अस्त्र-शस्त्र सजा लिये। 'अनंदु साहिब' की पाँच पउड़ियों का पाठ किया, अरदास की, श्री हरिमंदर साहिब में माथा टेका और जंग करने के लिए तैयार-बर-तैयार हो गये।

*'सतिगुर सिखी संग निभै,*
*सीस केसन के साथ'*

**बाबा जी की शहादत :** इतने में अब्दाली की फौज श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में घुस आई। बाबा गुरबख्श सिंघ जी और उनके साथी सिंघों ने दुश्मन का डट कर मुकाबला करना शुरू कर दिया। हमलावरों को सिंघ दर्शनी ड्योढ़ी पर पांव तक नहीं रखने दे रहे थे। जो आगे बढ़ता वो श्रीसाहिब (कृपाण) की भेंट चढ़ जाता।

दुश्मन के पास तीर तथा बंदूक जैसे दूर से मार करने वाले हथियार थे और इधर बिना कवच-ढाल के कृपाण, बरछा आदि लिए हुए मुट्ठी भर सिंघ थे। फिर भी दर्शनी ड्योढ़ी पर भयानक युद्ध हुआ। महज कृपाणों और बरछों से बाबा गुरबख्श सिंघ जी तथा उनके साथी सिंघों ने अनगिनत शत्रुओं को मौत की नींद सुला दिया। हज़ारों का लश्कर सामने था, मगर बाबा जी ने पांव पीछे नहीं हटाये :

*पग आगे पत ऊबरै, पग पाछै पत जाइ।*
*बैरी खंडे सिर धरै, बैरी क्या तकन सहाइ।*
*मत कोई आखै जगत को,*
*सिंघ मूयो मुख फेर पछाहि।*

मात्र तीस सिंघ कब तक हजारों के लश्कर के आगे टिकते! अनेक वैरियों को मारते हुए अन्ततः सभी सिंघ शहीद हो गये। बाबा गुरबख्श सिंघ जी और उनके साथी सिंघों ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

यह घटना २ दिसंबर सन् १७६४ ई. को घटित हुई थी। अब्दाली की फौज ने सभी सिंघों को शहीद कर श्री हरिमंदर साहिब को ढहा दिया। इस दिन शहीद हुए तीस सिंघों में से बाबा गुरबख्श सिंघ जी के अलावा भाई मान सिंघ, भाई बसंत सिंघ और भाई निहाल सिंघ भी प्रमुख थे। सभी शहीद सिंघों का अंतिम संस्कार श्री अकाल तख़्त साहिब के पीछे वाली भूमि पर किया गया, जहां वर्तमान में गुरुद्वारा बाबा गुरबख्श सिंघ जी सुस्थित है।

अब्दाली ने भले ही इस जंग में श्री हरिमंदर साहिब को बारूद से उड़ा दिया और अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया परंतु सिंघों ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में कार सेवा कर जल्द ही श्री हरिमंदर साहिब की नई इमारत उसार ली और यह पवित्र स्थान पुनः स्थापित हो गया।

ख़बरनामा

# एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लगातार पाँचवी बार बने शिरोमणि गु.प्र. कमेटी के प्रधान

श्री अमृतसर साहिब : ३ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के सालाना चुनाव में एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लगातार पाँचवी बार शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के प्रधान चुने गए हैं। शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के मुख्यालय स्थित सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में आयोजित इजलास के दौरान हुई चयन प्रक्रिया में कुल १३६ मतों में से ११७ मत प्राप्त कर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने जीत हासिल की। उनके मुकाबले स. मिट्ठू सिंघ काहनेके को १८ मत मिले, जबकि १ मत रद्द हुआ। इजलास के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार तथा तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी टेक सिंघ और शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के सदस्य उपस्थित रहे।

जनरल इजलास के दौरान स. रघूजीत सिंघ (विर्क) को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. बलदेव सिंघ कल्याण को कनिष्ठ उपाध्यक्ष तथा स. शेर सिंघ मंडवाला को महासचिव चुना गया। इसके अलावा चुनी गई ११ सदस्यीय कार्यकारी कमेटी में स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. सुरजीत सिंघ (कंग), स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, स. दलजीत सिंघ भिंडर, बीबी हरजिंदर कौर, स. बलदेव सिंघ कायमपुर, स. मेजर सिंघ (ढिल्लों), स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, डॉ. जंग बहादर सिंघ (राय) और स. मिट्ठू सिंघ काहनेके शामिल हैं।

एडवोकेट धामी ने प्रधान चुने जाने के बाद मीडिया के साथ बातचीत करते हुए कहा कि कौम की सेवा गुरु साहिब की बख्शिश द्वारा प्राप्त हुई है, जिसे वे गुरु साहिब की भय-भावना के अनुसार निभाने का यत्न करेंगे। एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गु.प्र. कमेटी की प्राथमिकता श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी की ३५०वर्षीय शताब्दी के समारोहों को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करवाना है। उन्होंने कहा कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में संगत की बढ़ रही आमद के मद्देनज़र सराय बनाने के लिए चल रहे कार्यों को जल्द पूरा करने के यत्न किये जाएंगे। उन्होंने अपने पर फिर से भरोसा जताने के लिए शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल और समूचीय लीडरशिप के साथ-साथ शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के सदस्यों का धन्यवाद करते हुए कहा कि वे समर्पण भावना के साथ पंथक कार्यों के लिए यत्नशील रहेंगे।

उन्होंने कहा कि धर्म-प्रचार क्षेत्र के साथ-साथ मानव कल्याण के कार्यों के लिए भी विशेष ध्यान दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिताओं की तैयारी पर चल रहे केन्द्रों के नियमों में संशोधन कर इसका और विस्तार किया जायेगा। मौजूदा समय में

प्रशासनिक सेवाओं में सिक्ख नौजवानों की शमूलियत कौमी हितों के लिए ज़रूरी है, इसलिए शिरोमणि गु.प्र.कमेटी द्वारा चलाए जा रहे प्रशासनिक सेवा केन्द्रों को और मज़बूत किया जाएगा। एनडीए के लिए चाहे पहले से ही शिरोमणि गु.प्र. कमेटी के स्कूलों-कॉलेजों में मूलभूत स्तर पर तैयारी करवाई जा रही है, अब इसके लिए बहादुरगढ़ में चल रही अकादमी का भी विस्तार करेंगे।

## पंथक समारोहों में सबको खुला न्यौता, सरकार भी शामिल हो, मगर राजनीति न करे

श्री अमृतसर साहिब : ८ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब के शहीदी साके की ३५०वर्षीय शताब्दी के अवसर पर धार्मिक समारोह व कीर्तन दरबार आयोजित करना सिक्खों की नुमाइंदा धार्मिक संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का कार्य है और पंजाब सरकार को इसमें दखलअन्दाज़ी करने से बचना चाहिए।

पंजाब सरकार द्वारा श्री अनंदपुर साहिब में कीर्तन समारोह करने की इजाज़त न देने से सम्बंधित चल रही खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के सचिव सरदार प्रताप सिंघ ने कहा कि सरकार को पहले ही स्पष्ट किया गया था कि वह श्री अनंदपुर साहिब में विकास कार्यों की तरफ ध्यान दे और संगत की सुविधा के लिए सहयोग प्रदान करे। इसके बावजूद भी सरकार सिक्ख संस्थाओं के मुकाबले धार्मिक समारोह और कीर्तन दरबार करवाने की अपनी ज़िद पर अडिग है, जो पंथक भावनाओं के विरुद्ध है।

शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के सचिव ने कहा कि धार्मिक समारोह मर्यादा के साथ जुड़ा हुआ मामला है, जिसमें किसी भी अवज्ञा के बाद विवाद उत्पन्न होते हैं। सरकार द्वारा पहले भी श्रीनगर में आयोजित एक समारोह में मर्यादा की हुई भारी उल्लंघना के बाद यह मामला श्री अकाल तख़्त साहिब पर विचारा गया था और जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने भी सरकार से कहा था कि वह धार्मिक समारोह की जगह श्री अनंदपुर साहिब के विकास की तरफ ध्यान दे।

उन्होंने कहा कि अब सरकार जानबूझ कर शिरोमणि गु.प्र.कमेटी को बदनाम करने की मंशा से धार्मिक समारोहों में दखलअन्दाज़ी कर रही है, जिससे उसे बचना चाहिए। सचिव सरदार प्रताप सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गु.प्र.कमेटी गुरुद्वारा साहिबान में समारोह आयोजित करने की इजाज़त देते वक्त पंथक भावनाओं को सामने रखती है और यह धार्मिक तथा पंथक संस्थाओं व जत्थेबंदियों के अलावा किसी अन्य को ऐसी आज्ञा नहीं देती। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु.प्र.कमेटी ने बड़े स्तर पर शताब्दी के समारोह आयोजित किए हुए हैं जिनमें प्रत्येक को न्योता दिया गया है और सरकार भी इन समारोहों में शामिल हो, मगर राजनीति न करे।

## शिरोमणि गु.प्र. कमेटी के प्रधान ने पंजाब सरकार द्वारा भाई जैता जी की यादगार में सिद्धांत विरोधी कार्यवाही पर उठाए सवाल

श्री अमृतसर साहिब : ११ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पंजाब सरकार की तरफ से श्री अनंदपुर साहिब में स्थापित की गई भाई जैता जी की यादगार में लगाई गई तसवीर को लेकर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि यादगार में लगाई तसवीर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की तरफ से भाई जैता जी को अमृत छकाते समय पैरों में जोड़ा (जूता) पहने हुए दिखाना सिक्ख सिद्धांतों, मर्यादा और सिक्ख भावनाओं के साथ खिलवाड़ है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि यह यादगार, जिसका उद्घाटन पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान द्वारा किया गया है, संगत के मन को ठेस पहुंचाती है।

उन्होंने कहा कि सिक्खी सिद्धांतों के अनुसार, अमृत-संस्कार एक पवित्र और मर्यादित संस्कार है, जिसमें आदर और सत्कार का होना लाज़िमी है। सरकार ने तसवीर के माध्यम से इस पवित्र प्रक्रिया को बिगाड़ने की हरकत कर सैद्धांतिक उल्लंघना की है।

शिरोमणि गु.प्र.कमेटी के प्रधान ने सरकार की धार्मिक मामलों में दखलअन्दाज़ी पर सवाल उठाते हुए कहा कि पहले भी सरकार ने श्रीनगर में किये धार्मिक समारोह के दौरान मर्यादा का उल्लंघन किया था और अब भाई जैता जी की स्थापित की गई यादगार में सिद्धांत के विरुद्ध तसवीर लगा कर दोबारा ऐसा किया है।

उन्होंने कहा कि यह दुख की बात है कि सरकार धार्मिक और ऐतिहासिक मामलों की समझ न रखने वाले अधिकारियों से धार्मिक काम ले रही है, जिस कारण ऐसे गंभीर सैद्धांतिक उल्लंघन हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि सिक्ख धर्म एक मर्यादित जीवन-जाच का नाम है और इसकी विलक्षणता इसकी मौलिकता एवं आदर्शों में है।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु.प्र. कमेटी शुरू से ही यह कह रही है कि सरकार श्री गुरु तेग बहादर साहिब की ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी के साथ जुड़े विकास कार्यों पर ध्यान दे और शिरोमणि गु.प्र. कमेटी द्वारा आयोजित धार्मिक समारोहों में सहयोग करे परन्तु, सरकार को तो राजनीति के बिना कुछ और दिखाई दे ही नहीं रहा।

एडवोकेट धामी ने ज़ोर देकर कहा कि सरकार तुरंत इस तसवीर को यादगार से हटाए और कौम से क्षमा-याचना करें। यदि सरकार ने इस गंभीर मामले को हलके में लिया तो शिरोमणि गु.प्र.कमेटी इस पर अपने स्तर पर कार्यवाही करने के लिए मजबूर होगी।

# माता साहिब कौर जी

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

# GURMAT GYAN December 2025

## DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा श्री बेर साहिब, सुलतानपुर लोधी, जिला कपूरथला

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 7-12-2025